अंक 14

अक्टूबर-मार्च 2026

यूको उत्कर्ष

छमाही पत्रिका

विशेष कवरेज

- बैंक के मुख्य अभियान
- अंचल की गतिविधियाँ
- वर्ष के टॉप परफ़ॉर्मर
- चुनिंदा लेख
- कविताएं

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

अंचल कार्यालय, करनाल

अनुक्रमणिका

दीपक जैन
अंचल प्रमुख

प्रेरणा
अभिनीत दयाल
उप–अंचल प्रमुख

दिग्दर्शन
गुरिन्दर कौर
मुख्य प्रबन्धक

अभिजीत कुमार
मुख्य प्रबन्धक

रिशा
मुख्य प्रबन्धक

प्रिया शर्मा
मुख्य प्रबन्धक

संपादक
रितेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक मण्डल
सुगंध कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक

कृष्ण कांत
प्रबन्धक

रविन्द्र कुमार
वरिष्ठ प्रबन्धक

अंजली अनेजा
प्रबन्धक

पुनीत नागपाल
वरिष्ठ प्रबन्धक

दीपक
प्रबन्धक

क्र. सं.	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
1.	अंचल प्रमुख का संदेश	2
2.	उप–अंचल प्रमुख का संदेश	3
3.	संपादक की कलम से	4
4.	हमारा विजन	5
5.	डिजिटल भारत और साइबर अपराध की चुनौतियां	6
6.	यूको बैंक का स्थापना दिवस	10
7.	पौधारोपण के चित्र	11
8.	तकनीकी युग में कैशलैस अर्थव्यवस्था	12
9.	कुरूक्षेत्र में नई शाखा का उद्घाटन	16
10.	कुरूक्षेत्र में नई शाखा का उद्घाटन के चित्र	17
11.	छमाही पत्रिका का विमोचन	18
12.	अंचल कार्यालय में गणतंत्र दिवस	19
13.	गणतंत्र दिवस के फोटो	20
14.	परिवर्तन की ओर	21
15.	शाखा प्रमुख की समीक्षा बैठक एवं चित्र	22
16.	स्वस्थ जीवन की कुंजी	24
17.	एमएसएमई एवं कृषि कर्निवल	28
18.	बाल दिवस पर कैंप	30
19.	छमाही में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं	31
20.	क्रिकेट टूर्नामेंट	33
21.	एनपीए की समस्या और समाधान	35
22.	सुर्खियों में यूको बैंक	39
23.	दीपावली उत्सव	41
24.	नजरिया – समस्याओं में अवसर की तलाश	44
25.	तीसरी उपसमिति का निरीक्षण	46
26.	जीवन का सुरक्षा कवच	48
27.	हिसार में नई शाखा का उद्घाटन	52
28.	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	53
29.	लोहड़ी एवं मकर संक्रांति उत्सव	54
30.	स्क्रीन के जाल में बचपन	55
31.	सतर्कता जागरूकता	59
32.	विश्व हिन्दी दिवस	62
33.	आज का इंसान	63
34.	एमएसएमई एवं एग्री मीट	64
35.	पुस्तक समीक्षा	65
36.	सेहत का पावर हाउस	67

अंचल प्रमुख की कलम से

प्रिय पाठकगण,

करनाल अंचल की गृह पत्रिका “यूको उत्कर्ष” के इस अंक के माध्यम से प्रथम बार आप सभी से संवाद करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे अंचल की उपलब्धियों, गतिविधियों एवं रचनात्मक प्रयासों का दर्पण है, बल्कि यह हम सभी कर्मचारियों के विचारों, अनुभवों और भावनाओं को साझा करने का एक सशक्त माध्यम भी है। वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान बैंक के व्यवसायिक विकास में करनाल अंचल ने उल्लेखनीय एवं अग्रणी भूमिका निभाई है। अंचल के सभी शाखाओं तथा कार्यालयों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समर्पित प्रयासों से हमने विभिन्न व्यवसायिक अभियानों विशेषत: यूको कार्निवल तथा ग्राहक सेवा पहलों कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। यह उपलब्धियाँ आप सभी की कड़ी मेहनत, टीम भावना और बैंक के प्रति प्रतिबद्धता का परिणाम हैं। इस सराहनीय योगदान के लिए मैं आप सभी को हृदय से बधाई देता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि वित्तीय वर्ष 2026-27 में भी आप सभी का यही सतत सहयोग एवं सक्रिय सहभागिता करनाल अंचल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होगा। आज बैंकिंग क्षेत्र तीव्र गति से डिजिटल परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है और यूको बैंक भी इस परिवर्तन को अपनाते हुए आधुनिक तकनीक आधारित सेवाओं को निरंतर सुदृढ़ कर रहा है। यूको डिजिटलीकरण के माध्यम से बैंक ग्राहकों को सरल, सुरक्षित एवं त्वरित बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध करा रहा है। इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूको एम-बैंकिंग प्लस, डिजिटल ऋण प्रसंस्करण, टैब बैंकिंग, क्यूआर आधारित भुगतान प्रणाली तथा विभिन्न ऑनलाइन सेवाओं के माध्यम से ग्राहकों को घर बैठे बैंकिंग सेवाओं का लाभ प्राप्त हो रहा है। डिजिटल पहल से न केवल बैंक की कार्यक्षमता में वृद्धि हुई है, बल्कि ग्राहक सेवा की गुणवत्ता भी और अधिक बेहतर हुई है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हम स्वयं भी इन डिजिटल सेवाओं का अधिकतम उपयोग करें तथा ग्राहकों को भी इनके प्रति जागरूक करें, जिससे बैंक की डिजिटल यात्रा और अधिक सफल हो सके। इस वर्ष की पदोन्नति प्रक्रिया में पदोन्नत हुए सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ तथा उनके उज्ज्वल एवं सफल भविष्य की कामना करता हूँ। साथ ही, जो साथी इस वर्ष पदोन्नति प्राप्त नहीं कर सके, उन्हें निराश होने की आवश्यकता नहीं है। सफलता निरंतर प्रयास, धैर्य और सकारात्मक सोच का परिणाम होती है। आप सभी अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते रहें, निश्चित ही आने वाले समय में आपकी मेहनत रंग लाएगी और सफलता आपके कदम चूमेगी। बैंक की गृह पत्रिकाएँ कर्मचारियों को एक ऐसा सृजनात्मक मंच प्रदान करती हैं, जिसके माध्यम से वे अपने विचारों, अनुभवों एवं साहित्यिक अभिरुचि को राजभाषा हिंदी में अभिव्यक्त कर सकते हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि हमारे अनेक सहयोगी अपने व्यस्ततम बैंकिंग कार्यों के बावजूद लेख, कविता, संस्मरण एवं अन्य रचनात्मक सामग्री के माध्यम से इस पत्रिका को समृद्ध बना रहे हैं। मैं ऐसे सभी स्टाफ सदस्यों की विशेष रूप से प्रशंसा करता हूँ, जिन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से इस पत्रिका को सार्थक स्वरूप प्रदान किया है। हम सभी को यह संकल्प लेना चाहिए कि अपने दैनिक बैंकिंग कार्यों में हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करें। राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान और कार्यकुशलता का भी एक महत्वपूर्ण अंग है। जब हम एक कदम आगे बढ़ाते हैं, तो अगला कदम स्वतः आसान हो जाता है। आवश्यकता केवल प्रथम प्रयास करने की है। आने वाला समय नई चुनौतियों एवं अवसरों से परिपूर्ण है। व्यवसाय वृद्धि, ग्राहक सेवा, डिजिटल बैंकिंग तथा प्रतिस्पर्धी वातावरण में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु हमें निरंतर प्रयासरत रहना होगा। मुझे विश्वास है कि आप सभी के सहयोग, समर्पण एवं टीम भावना से करनाल अंचल आगे भी इसी प्रकार सफलता के नए आयाम स्थापित करता रहेगा तथा उन्नति के पथ पर निरंतर अग्रसर रहेगा।

शुभकामनाओं सहित,

दीपक जैन

अंचल प्रमुख

अंचल कार्यालय करनाल

उप अंचल प्रमुख की कलम से

प्रिय साथियों

अंचल कार्यालय करनाल की ई-पत्रिका "यूको उत्कर्ष" के माध्यम से आप सभी से प्रथम बार संवाद करते हुए मैं अत्यंत प्रसन्नता एवं गौरव का अनुभव कर रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से मैं अंचल के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। यह पत्रिका केवल हमारे अंचल की गतिविधियों, उपलब्धियों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों का संकलन मात्र नहीं है, बल्कि यह हम सभी के विचारों, अनुभवों एवं साहित्यिक प्रतिभा को एक साझा मंच प्रदान करने वाला महत्वपूर्ण माध्यम भी है।भारत के संविधान के अनुसार हिन्दी हमारी राजभाषा है। अतः इसके कार्यान्वयन, विकास एवं प्रचार-प्रसार में योगदान देना हम सभी का नैतिक एवं प्रशासनिक दायित्व है। बैंकिंग कार्यों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग न केवल सरकारी नीतियों के अनुरूप है, बल्कि यह ग्राहकों से सरल एवं सहज संवाद स्थापित करने का भी प्रभावी माध्यम है। मुझे प्रसन्नता है कि करनाल अंचल में राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन हेतु आप सभी द्वारा किए गए प्रयास अत्यंत सराहनीय रहे हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में भी आप सभी इसी समर्पण एवं उत्साह के साथ अपने कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करेंगे। किसी भी भाषा के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। पत्रिकाएँ व्यक्ति को अपने विचार, भावनाएँ, अनुभव, दृष्टिकोण एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति को साझा करने का अवसर प्रदान करती हैं। यह न केवल भाषा के संवर्धन का माध्यम हैं, बल्कि संगठनात्मक संस्कृति को सुदृढ़ करने का भी सशक्त साधन हैं। "यूको उत्कर्ष" का प्रकाशन इसी दिशा में एक सार्थक एवं प्रेरणादायक प्रयास है। हमें गर्व है कि इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी के प्रति अपने दायित्व एवं सम्मान को एक सजीव स्वरूप देने का प्रयास कर रहे हैं। साथियों, अंचल में राजभाषा के कार्यान्वयन का मुख्य उद्देश्य सभी शाखा प्रभारियों एवं कर्मचारियों के साथ समन्वय स्थापित करते हुए अंचल की सभी शाखाओं में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। यह केवल औपचारिक अनुपालन तक सीमित नहीं है, बल्कि हिन्दी को कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाना भी इसका प्रमुख उद्देश्य है। मुझे यह जानकर अत्यंत संतोष एवं गर्व हो रहा है कि करनाल अंचल इस दिशा में निरंतर सार्थक प्रयास कर रहा है, जिसमें आप सभी का सक्रिय सहयोग एवं सकारात्मक सहभागिता रही है। यही सामूहिक प्रयास हमारे अंचल को प्रगति के नए आयामों तक ले जा रहे हैं। आज के परिवर्तित बैंकिंग परिवेश में जहाँ तकनीकी विकास एवं डिजिटल सेवाएँ निरंतर बढ़ रही हैं, वहीं राजभाषा हिन्दी में भी तकनीकी माध्यमों से कार्य करना समय की आवश्यकता बन गया है। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि आधुनिक बैंकिंग सेवाओं, डिजिटल प्लेटफॉर्म एवं ग्राहक सेवा के क्षेत्र में भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग हो, जिससे राजभाषा का प्रभाव और व्यापक हो सके। यह हम सभी के संयुक्त प्रयासों से ही संभव है।अंत में, मैं "यूको उत्कर्ष" के इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल, सहयोगी अधिकारियों तथा पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के सभी लेखकों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आप सभी ने अपने व्यस्ततम कार्यों के बावजूद अपनी रचनात्मकता को समय देकर इस पत्रिका को समृद्ध बनाया है, जो अत्यंत प्रशंसनीय है। मैं इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ व्यक्त करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि आप सभी के सामूहिक, सकारात्मक एवं सार्थक प्रयासों से करनाल अंचल भविष्य में भी निरंतर नई ऊँचाइयों को प्राप्त करता रहेगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

अभिनीत दयाल

उप अंचल प्रमुख
अंचल कार्यालय करनाल

संपादक की कलम से

प्रिय पाठकों,

यूको उत्कर्ष के 14वें अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका केवल सूचनाओं का संकलन नहीं, बल्कि हमारे बैंक की कार्य-संस्कृति, भाषाई प्रतिबद्धता और रचनात्मक चिंतन का सशक्त प्रतिबिंब है। साथ ही यह ऐसा मंच भी है, जहाँ ज्ञान, अनुभव, नवाचार और सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ एक-दूसरे से जुड़कर सभी पाठकों को नई प्रेरणा प्रदान करती हैं। किसी भी संस्था की वास्तविक पहचान केवल उसकी सेवाओं से नहीं, बल्कि उन सेवाओं को प्रस्तुत करने के तरीके से भी होती है। जब ग्राहक अपनी ही भाषा में संवाद प्राप्त करते हैं, तो उनमें सहजता, विश्वास और आत्मीयता का भाव स्वतः विकसित होता है। यही कारण है कि राजभाषा हिंदी हमारे लिए मात्र एक प्रशासनिक दायित्व नहीं, बल्कि ग्राहकों के साथ सुदृढ़ एवं स्थायी संबंध स्थापित करने का प्रभावी माध्यम है। भाषा मानव सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। यह केवल विचारों के आदान-प्रदान का साधन नहीं, बल्कि संस्कृति, ज्ञान और सामाजिक विकास की आधारशिला भी है। जिस प्रकार किसी वृक्ष की मजबूती उसकी जड़ों पर निर्भर करती है, उसी प्रकार किसी राष्ट्र की प्रगति उसकी भाषाई चेतना से जुड़ी होती है। अपनी मातृभाषा और राजभाषा के सम्मान के साथ आगे बढ़ते हुए ही समावेशी विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए हमारे बैंक में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए निरंतर सकारात्मक प्रयास किए जा रहे हैं। वर्तमान समय में हिंदी का महत्व प्रशासनिक सीमाओं से कहीं आगे बढ़ चुका है। व्यापार, उद्योग, बैंकिंग, वित्त, सूचना प्रौद्योगिकी तथा डिजिटल सेवाओं के विस्तार के साथ हिंदी एक प्रभावशाली व्यावसायिक भाषा के रूप में स्थापित हुई है। बदलते आर्थिक परिवेश में यह ग्राहकों तक प्रभावी पहुँच बनाने और सेवाओं को अधिक सरल, पारदर्शी तथा सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। बैंकिंग क्षेत्र में भी हिंदी का व्यापक उपयोग न केवल कार्यकुशलता को बढ़ाता है, बल्कि ग्राहक संतुष्टि और संस्थागत विश्वास को भी सुदृढ़ करता है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग के प्रति निरंतर उत्साह और समर्पण का परिचय दे रहे हैं। इस अंक के प्रकाशन में जिन सभी सहयोगियों ने अपने लेख, विचार, अनुभव और रचनाएँ देकर योगदान दिया है, मैं उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह अंक सभी पाठकों के लिए उपयोगी, प्रेरणादायक एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को और अधिक गति प्रदान करेगा। आइए, हम सभी मिलकर अपने कार्यस्थलों पर हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करें तथा ऐसी कार्य-संस्कृति का निर्माण करें, जहाँ सरल, सहज और व्यवहारिक हिंदी के माध्यम से उत्कृष्ट बैंकिंग सेवाएँ प्रदान की जा सकें।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

रितेश कुमार

प्रबंधक (राजभाषा)

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, करनाल

हमारा विज़न

"एक ऐसी विश्वस्तरीय वित्तीय संस्था के रूप में सामने आना जो अत्यंत विश्वस्त और प्रशंसनीय हो तथा जिसे प्रत्येक ग्राहक व निवेशक बहुत पसंद करता हो और जिस पर उसके कर्मचारियों को गर्व हो"

OUR VISION

"To emerge as the most trusted, admired and sought after world class financial institution and to be the most preferred destination for every customer and investor and place of pride for its employees."

डिजिटल भारत और साइबर अपराध की चुनौतियाँ

भारत आज तेजी से डिजिटल क्रांति के दौर से गुजर रहा है। इंटरनेट, स्मार्टफोन और आधुनिक तकनीकों ने हमारे जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। सरकार द्वारा शुरू किए गए “डिजिटल इंडिया” अभियान ने देश को तकनीकी रूप से सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, परिवहन, मनोरंजन और सरकारी सेवाएँ डिजिटल माध्यमों से उपलब्ध हो रही हैं। लोग घर बैठे मोबाइल फोन के माध्यम से पैसे का लेन-देन कर रहे हैं, ऑनलाइन खरीदारी कर रहे हैं तथा सरकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर रहे हैं। डिजिटल तकनीक ने जहां जीवन को सुविधाजनक बनाया है, वहीं दूसरी ओर साइबर अपराध जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। वर्तमान समय में साइबर अपराध केवल तकनीकी समस्या नहीं रह गया है, बल्कि यह आर्थिक, सामाजिक और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा महत्वपूर्ण विषय बन चुका है।

Digital India
Power To Empower

डिजिटल भारत का उद्देश्य देश को तकनीकी रूप से सशक्त बनाना तथा प्रत्येक नागरिक तक डिजिटल सुविधाएँ पहुँचाना है। इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं के विस्तार से देश के दूर-दराज क्षेत्रों तक भी तकनीक की पहुँच बढ़ी है। आज ग्रामीण क्षेत्रों में भी लोग ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआईभुगतान, ई-गवर्नेंस सेवाओं और डिजिटल शिक्षा का लाभ उठा रहे हैं। डिजिटल तकनीक ने सरकारी कार्यों में पारदर्शिता बढ़ाई है तथा भ्रष्टाचार को कम करने में भी सहायता की है। कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल सेवाओं ने शिक्षा, व्यापार और स्वास्थ्य सेवाओं को बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल तकनीक आधुनिक भारत के विकास की आधारशिला बन चुकी है।

हालांकि डिजिटल तकनीक के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर अपराधों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है। साइबर अपराध वह अपराध है जिसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल या डिजिटल नेटवर्क का उपयोग करके किसी व्यक्ति, संस्था या सरकार को नुकसान पहुँचाया जाता है। साइबर अपराधी तकनीकी ज्ञान का गलत उपयोग करते हुए लोगों की निजी जानकारी चुरा लेते हैं, बैंक खातों से धन निकाल लेते हैं तथा डिजिटल माध्यमों से धोखाधड़ी करते हैं। इंटरनेट पर उपलब्ध विशाल डेटा और लोगों की बढ़ती ऑनलाइन निर्भरता ने साइबर अपराधियों को नए अवसर प्रदान किए हैं। आज साइबर अपराध विश्व के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है।

भारत में ऑनलाइन बैंकिंग और डिजिटल भुगतान के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर ठगी के मामलों में भारी वृद्धि हुई है। यूपीआई, मोबाइल बैंकिंग और इंटरनेट बैंकिंग ने लेन-देन को सरल बनाया है, लेकिन इसके साथ ही साइबर अपराधियों ने भी नए तरीके खोज लिए हैं। अपराधी नकली कॉल, संदेश और ई-मेल भेजकर लोगों से ओटीपी, एटीएम पिनऔर बैंकिंग जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। कई

बार लोग अनजाने में फर्जी लिंक पर क्लिक कर देते हैं और उनका बैंक खाता खाली हो जाता है। आज प्रतिदिन हजारों लोग साइबर ठगी का शिकार हो रहे हैं। यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है।

फिशिंग साइबर अपराध का एक प्रमुख रूप है। इसमें अपराधी नकली वेबसाइट या ई-मेल बनाकर लोगों को भ्रमित करते हैं। कई बार लोगों को ऐसा संदेश भेजा जाता है जिसमें बैंक खाते के बंद होने या पुरस्कार मिलने का झूठा दावा किया जाता है। लोग इन संदेशों पर विश्वास करके अपनी निजी जानकारी साझा कर देते हैं और ठगी का शिकार हो जाते हैं। इसी प्रकार क्यूआर कोड स्कैम, फर्जी मोबाइल एप तथा सोशल मीडिया लिंक के माध्यम से भी धोखाधड़ी की जा रही है। साइबर अपराधी लगातार नए-नए तरीके अपनाकर लोगों को नुकसान पहुँचा रहे हैं।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी साइबर अपराध का बड़ा माध्यम बन चुके हैं। फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लोग अपनी निजी जानकारी और तस्वीरें साझा करते हैं। अपराधी इन जानकारियों का दुरुपयोग करके फर्जी प्रोफाइल बनाते हैं तथा लोगों को ब्लैकमेल करते हैं। महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध साइबर अपराधों में विशेष रूप से वृद्धि हुई है। साइबर बुलिंग, ऑनलाइन उत्पीड़न और अश्लील सामग्री के प्रसार जैसी घटनाएँ समाज के लिए गंभीर चिंता का विषय हैं। कई बार साइबर अपराध के कारण लोग मानसिक तनाव और अवसाद का शिकार हो जाते हैं।

डिजिटल भारत की सबसे बड़ी चुनौती साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाना है। जैसे-जैसे सरकारी सेवाएँ और वित्तीय संस्थान डिजिटल हो रहे हैं, वैसे-वैसे साइबर हमलों का खतरा भी बढ़ रहा है। कई बार हैकर सरकारी वेबसाइटों और संस्थानों के डेटा को निशाना बनाते हैं। यदि संवेदनशील सरकारी जानकारी गलत हाथों में चली जाए, तो यह राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए गंभीर खतरा बन सकती है। इसलिए साइबर सुरक्षा केवल व्यक्तिगत सुरक्षा का विषय नहीं है, बल्कि यह राष्ट्र की सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है।

आज रैनसमवेयर हमले भी तेजी से बढ़ रहे हैं। इसमें अपराधी किसी कंप्यूटर या नेटवर्क के डेटा को लॉक कर देते हैं और उसे वापस खोलने के बदले धन की मांग करते हैं। अस्पताल, बैंक, शैक्षणिक संस्थान तथा सरकारी कार्यालय इस प्रकार के हमलों का शिकार हो चुके हैं। कई बार महत्वपूर्ण डेटा नष्ट हो जाने से संस्थानों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इससे स्पष्ट है कि साइबर अपराध केवल व्यक्तिगत समस्या नहीं है, बल्कि यह संस्थागत और राष्ट्रीय स्तर की चुनौती बन चुका है।

साइबर अपराध बढ़ने के पीछे डिजिटल जागरूकता की कमी भी एक बड़ा कारण है। भारत में बड़ी संख्या में लोग पहली बार इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का उपयोग कर रहे हैं। उन्हें

साइबर सुरक्षा के नियमों और जोखिमों की पूरी जानकारी नहीं होती। लोग कमजोर पासवर्ड का उपयोग करते हैं, अनजान लिंक पर क्लिक कर देते हैं और अपनी निजी जानकारी आसानी से साझा कर देते हैं। यही लापरवाही साइबर अपराधियों के लिए अवसर बन जाती है। इसलिए डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना अत्यंत आवश्यक है। भारत सरकार साइबर अपराधों को रोकने के लिए विभिन्न कदम उठा रही है। सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 साइबर अपराधों के विरुद्ध प्रमुख कानून है। इस कानून के अंतर्गत हैकिंग, डेटा चोरी, ऑनलाइन धोखाधड़ी और अश्लील सामग्री के प्रसार जैसे अपराधों के लिए दंड का प्रावधान किया गया है। इसके अतिरिक्त सरकार ने राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल शुरू किया है, जहाँ लोग ऑनलाइन शिकायत दर्ज कर सकते हैं। भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया दल (CERT-In) साइबर हमलों की निगरानी और रोकथाम का कार्य करता है। समय-समय पर सरकार और बैंक लोगों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए अभियान भी चलाते हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में साइबर सुरक्षा का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। डिजिटल बैंकिंग के बढ़ते उपयोग के कारण बैंक साइबर अपराधियों के प्रमुख निशाने पर रहते हैं। बैंक ग्राहकों को समय-समय पर जागरूक करते हैं कि वे ओटीपी, पासवर्ड और पिनकिसी के साथ साझा न करें। साथ ही बैंक आधुनिक सुरक्षा तकनीकों का उपयोग करके समय पर जागरूक करते हैं कि वे ओटीपी, पासवर्ड और पिनकिसी के साथ साझा न करें। साथ ही बैंक आधुनिक सुरक्षा तकनीकों का उपयोग करके अपने सिस्टम को सुरक्षित बनाने का प्रयास कर रहे हैं। दो-स्तरीय प्रमाणीकरण (Two-Factor Authentication), एन्क्रिप्शन और बायोमेट्रिक सुरक्षा जैसी तकनीकों का उपयोग साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी साइबर सुरक्षा की जानकारी देना आवश्यक हो गया है। आज बच्चे और युवा इंटरनेट तथा सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग कर रहे हैं। यदि उन्हें साइबर सुरक्षा की सही जानकारी न हो, तो वे आसानी से साइबर अपराध का शिकार बन सकते हैं। इसलिए विद्यालयों और महाविद्यालयों में साइबर जागरूकता को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को सुरक्षित इंटरनेट उपयोग, मजबूत पासवर्ड और डिजिटल नैतिकता के बारे में शिक्षित करना समय की आवश्यकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), क्लाउड कंप्यूटिंग और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी नई तकनीकों ने डिजिटल दुनिया को और अधिक उन्नत बना दिया है। लेकिन इन तकनीकों के साथ साइबर अपराधों के नए खतरे भी उत्पन्न हुए हैं। भविष्य में साइबर अपराध और अधिक जटिल हो सकते हैं। इसलिए साइबर सुरक्षा प्रणाली को लगातार अद्यतन और मजबूत बनाना आवश्यक होगा। तकनीकी विकास के साथ-साथ कानूनी और प्रशासनिक ढाँचे को भी आधुनिक बनाना होगा।

साइबर अपराध से बचने के लिए प्रत्येक नागरिक

को सावधान रहना चाहिए। मजबूत पासवर्ड का उपयोग करना, समय-समय पर पासवर्ड बदलना, संदिग्ध लिंक पर क्लिक न करना तथा निजी जानकारी साझा करने से बचना आवश्यक है। मोबाइल और कंप्यूटर में सुरक्षा सॉफ्टवेयर का उपयोग करना चाहिए। सोशल मीडिया पर सीमित और सावधानीपूर्वक जानकारी साझा करनी चाहिए। जागरूकता और सतर्कता ही साइबर अपराध से बचने का सबसे प्रभावी उपाय है। डिजिटल भारत का सपना तभी सफल हो सकता है जब देश का डिजिटल वातावरण सुरक्षित हो। यदि लोग साइबर अपराध के भय से डिजिटल सेवाओं का उपयोग करने में असहज महसूस करेंगे, तो डिजिटल क्रांति का उद्देश्य प्रभावित होगा। इसलिए सरकार, संस्थाओं और नागरिकों को मिलकर साइबर सुरक्षा को मजबूत बनाना होगा। तकनीकी विकास के साथ-साथ नैतिकता, जागरूकता और जिम्मेदारी को भी बढ़ावा देना आवश्यक है।

अंततः कहा जा सकता है कि डिजिटल भारत आधुनिक भारत के विकास का महत्वपूर्ण आधार है। इसने देश को नई दिशा और नई गति प्रदान की है। लेकिन इसके साथ साइबर अपराध जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। साइबर अपराध केवल आर्थिक हानि का विषय नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है। इसलिए साइबर कानूनों का कठोर पालन, तकनीकी सुरक्षा, डिजिटल जागरूकता और सामूहिक प्रयास अत्यंत आवश्यक हैं। यदि हम सतर्कता और जिम्मेदारी के साथ डिजिटल तकनीक का उपयोग करें, तो सुरक्षित और सशक्त डिजिटल भारत का निर्माण संभव है।

अंजली अनेजा
प्रबंधक (सूचना प्रौद्योगिकी)
अंचल कार्यालय करनाल

यूको बैंक के 84वें स्थापना दिवस पर करनाल अंचल कार्यालय में रक्तदान एवं स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन।

यूको बैंक के 84 वें स्थापना दिवस के अवसर पर 6 जनवरी 2026 को अंचल कार्यालय, करनाल में सामाजिक उत्तरदायित्व के तहत रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसके साथ ही आमजन एवं बैंक कर्मियों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का भी आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह जी ने शिविर का शुभारंभ किया। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि यूको बैंक के 84वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में करनाल अंचल के अंतर्गत दो नई शाखाओं गोहाना तथा सेक्टर-3, कुरुक्षेत्र का उद्घाटन भी किया गया है। यह यूको बैंक के विस्तार और ग्राहकों को बेहतर बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। श्री अभिषेक सिंह ने कहा कि यूको बैंक पिछले 84 वर्षों से देशवासियों को समर्पित भाव से अपनी बैंकिंग सेवाएं प्रदान कर रहा है और सामाजिक कल्याण की गतिविधियों में निरंतर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसी क्रम में अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत 84 पौधे लगाए गए। कार्यक्रम के दौरान बैंक अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सामाजिक सेवा, स्वास्थ्य जागरूकता तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उपस्थितजनों ने यूको बैंक द्वारा किए गए इन प्रयासों की सराहना की और इसे समाज के लिए प्रेरणादायक बताया।

रक्तदान एवं स्वास्थ्य जांच शिविर के दौरान लिए गए चित्र

पौधारोपण के दौरान लिए गए चित्र

तकनीकी युग में कैशलैस अर्थव्यवस्था

आधुनिक युग विज्ञान, तकनीक और डिजिटल क्रांति का युग है। आज मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी परिवर्तन दिखाई दे रहा है। बैंकिंग, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन और सरकारी सेवाएँ तेजी से डिजिटल माध्यमों की ओर बढ़ रही हैं। इसी परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है — "कैशलैस अर्थव्यवस्था"। कैशलैस अर्थव्यवस्था का अर्थ ऐसी आर्थिक व्यवस्था से है जिसमें लेन-देन मुख्यतः डिजिटल माध्यमों से किया जाए और नकद मुद्रा का उपयोग न्यूनतम हो। इसमें डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, इंटरनेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, डिजिटल वॉलेट तथा अन्य इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का उपयोग करके भुगतान किया जाता है। वर्तमान समय में विश्व के अनेक देश डिजिटल भुगतान प्रणाली को बढ़ावा दे रहे हैं और भारत भी इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है।

भारत में कैशलैस अर्थव्यवस्था की अवधारणा विशेष रूप से पिछले कुछ वर्षों में अधिक लोकप्रिय हुई है। डिजिटल इंडिया अभियान, जनधन योजना, आधार और मोबाइल तकनीक के विकास ने देश में डिजिटल भुगतान को नई दिशा प्रदान की है। वर्ष 2016 में नोटबंदी के बाद डिजिटल लेन-देन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। लोगों ने नकदी के स्थान पर डिजिटल भुगतान के विकल्पों को अपनाना शुरू किया। आज छोटे दुकानदार से लेकर बड़े व्यापारिक संस्थान तक डिजिटल भुगतान स्वीकार कर रहे हैं। गाँवों और कस्बों तक भी ऑनलाइन भुगतान प्रणाली का विस्तार हो चुका है। इससे स्पष्ट होता है कि भारत तेजी से कैशलैस अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।

कैशलैस अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इससे लेन-देन सरल, तेज और सुविधाजनक हो जाता है। पहले लोगों को पैसे निकालने के लिए बैंक जाना पड़ता था, लंबी कतारों में खड़ा होना पड़ता था तथा नकदी रखने का जोखिम भी बना रहता था। लेकिन अब मोबाइल फोन के माध्यम से कुछ ही सेकंड में भुगतान किया जा सकता है। लोग घर बैठे बिजली, पानी, गैस और मोबाइल बिल जमा कर सकते हैं। ऑनलाइन खरीदारी, टिकट बुकिंग तथा बैंकिंग सेवाएँ भी डिजिटल माध्यम से आसानी से उपलब्ध हो रही हैं। इससे समय और श्रम दोनों की बचत होती है।

डिजिटल भुगतान प्रणाली ने व्यापार और बैंकिंग क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन किया है। पहले व्यापारिक लेन-देन में नकदी का अत्यधिक उपयोग होता था, जिससे चोरी, भ्रष्टाचार और कर चोरी की संभावना बनी रहती थी। लेकिन कैशलैस व्यवस्था में प्रत्येक लेन-देन का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार होता है। इससे आर्थिक पारदर्शिता बढ़ती है और काले धन पर नियंत्रण करने में सहायता मिलती है। सरकार भी डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देकर कर प्रणाली को अधिक पारदर्शी और प्रभावी बना रही है। इससे सरकारी राजस्व में वृद्धि होती है और देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होती है।

कैशलैस अर्थव्यवस्था भ्रष्टाचार को कम करने में भी

सहायक सिद्ध हो सकती है। नकद लेन-देन में धन को छिपाना आसान होता है, लेकिन डिजिटल भुगतान में प्रत्येक लेन-देन का रिकॉर्ड सुरक्षित रहता है। इससे अवैध धन, रिश्वतखोरी और कर चोरी पर नियंत्रण संभव होता है। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं की राशि सीधे लाभार्थियों के बैंक खातों में भेजी जा रही है। इससे बिचौलियों की भूमिका कम हुई है और पारदर्शिता बढ़ी है। डिजिटल भुगतान प्रणाली ने सरकारी योजनाओं को अधिक प्रभावी और विश्वसनीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कैशलैस अर्थव्यवस्था का एक अन्य महत्वपूर्ण लाभ सुरक्षा है। नकदी रखने पर चोरी और लूट का खतरा बना रहता है। व्यापारियों और आम नागरिकों को बड़ी मात्रा में नकदी रखने में असुविधा होती है। लेकिन डिजिटल भुगतान के माध्यम से नकदी रखने की आवश्यकता कम हो जाती है। लोग सुरक्षित रूप से ऑनलाइन लेन-देन कर सकते हैं। इससे आर्थिक गतिविधियाँ अधिक सुरक्षित और व्यवस्थित बनती हैं। विशेष रूप से महामारी और आपातकालीन परिस्थितियों में डिजिटल भुगतान प्रणाली अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई है।

भारत में यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (UPI) ने डिजिटल भुगतान को अत्यधिक लोकप्रिय बना दिया है। यूपीआई के माध्यम से लोग किसी भी समय और कहीं भी तुरंत पैसे भेज और प्राप्त कर सकते हैं। छोटे दुकानदार, सब्जी विक्रेता और रिक्शा चालक तक भी अब क्यूआरकोड के माध्यम से भुगतान स्वीकार कर रहे हैं। इससे डिजिटल भुगतान आम जनता तक पहुँच चुका है। आज भारत विश्व में डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में अग्रणी देशों में शामिल हो गया है।

हालांकि कैशलैस अर्थव्यवस्था के अनेक लाभ हैं, लेकिन इसके सामने कई चुनौतियाँ भी हैं। भारत जैसे विशाल और विविधता वाले देश में सभी लोगों तक डिजिटल सुविधाएँ पहुँचाना आसान नहीं है। ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और बिजली की समस्या अभी भी बनी हुई है। कई स्थानों पर नेटवर्क की कमी के कारण डिजिटल भुगतान में कठिनाई आती है। इसके अतिरिक्त बड़ी संख्या में लोग डिजिटल तकनीक से पूरी तरह परिचित नहीं हैं। अशिक्षा और डिजिटल साक्षरता की कमी भी कैशलैस अर्थव्यवस्था के मार्ग में बाधा बनती है।

साइबर अपराध कैशलैस अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। डिजिटल भुगतान के बढ़ते उपयोग के साथ साइबर ठगी के मामलों में भी वृद्धि हुई है। अपराधी नकली कॉल, संदेश और लिंक के माध्यम से लोगों की बैंकिंग जानकारी प्राप्त कर लेते हैं और उनके खातों से धन निकाल लेते हैं। फिशिंग, ओटीपीधोखाधड़ी, क्यूआरकोड स्कैम और ऑनलाइन बैंकिंग फ्रॉड जैसी घटनाएँ तेजी से बढ़ रही हैं। कई लोग जागरूकता के अभाव में साइबर अपराध का शिकार हो जाते हैं। इसलिए डिजिटल भुगतान के साथ साइबर सुरक्षा को

मजबूत बनाना अत्यंत आवश्यक है।

कैशलैस अर्थव्यवस्था में तकनीकी सुरक्षा का विशेष महत्व है। बैंक और वित्तीय संस्थान अपने सिस्टम को सुरक्षित बनाने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं। दो-स्तरीय प्रमाणीकरण, एन्क्रिप्शन और बायोमेट्रिक सुरक्षा जैसी तकनीकों ने डिजिटल भुगतान को अधिक सुरक्षित बनाया है। सरकार और बैंक समय-समय पर लोगों को जागरूक करते हैं कि वे OTP, पासवर्ड और PIN किसी के साथ साझा न करें। डिजिटल सुरक्षा के प्रति जागरूकता ही साइबर अपराध से बचाव का सबसे प्रभावी उपाय है।

कैशलैस अर्थव्यवस्था को सफल बनाने में सरकार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत सरकार डिजिटल इंडिया अभियान के माध्यम से देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का प्रयास कर रही है। प्रधानमंत्री जनधन योजना के अंतर्गत करोड़ों लोगों के बैंक खाते खोले गए हैं। आधार और मोबाइल तकनीक को बैंकिंग सेवाओं से जोड़कर डिजिटल भुगतान को बढ़ावा दिया गया है। भीम ऐप, रुपे कार्ड और यूपीआई जैसी सुविधाओं ने डिजिटल भुगतान को सरल और सुलभ बनाया है। सरकार लगातार डिजिटल अवसंरचना को मजबूत बनाने का प्रयास कर रही है।

ग्रामीण भारत में कैशलैस अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना एक बड़ी चुनौती है। गाँवों में इंटरनेट और तकनीकी सुविधाओं की कमी के कारण लोग अभी भी नकद लेन-देन पर अधिक निर्भर हैं। कई ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को डिजिटल भुगतान प्रणाली की पर्याप्त जानकारी नहीं है। इसलिए डिजिटल साक्षरता अभियान चलाना आवश्यक है। यदि ग्रामीण जनता को डिजिटल भुगतान के लाभ और सुरक्षा के बारे में सही जानकारी दी जाए, तो वे भी तेजी से कैशलैस व्यवस्था को अपना सकते हैं।

कैशलैस अर्थव्यवस्था का प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और प्रशासनिक व्यवस्था को भी प्रभावित करता है। डिजिटल भुगतान से पारदर्शिता बढ़ती है और सरकारी योजनाओं का लाभ सीधे जनता तक पहुँचता है। इससे भ्रष्टाचार कम होता है तथा प्रशासनिक व्यवस्था अधिक प्रभावी बनती है। डिजिटल भुगतान प्रणाली महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में भी सहायक सिद्ध हो रही है। आज महिलाएँ मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान के माध्यम से स्वतंत्र रूप से आर्थिक लेन-देन कर रही हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी कैशलैस अर्थव्यवस्था का महत्व बढ़ रहा है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में फीस भुगतान, छात्रवृत्ति और अन्य सेवाएँ डिजिटल माध्यम से उपलब्ध कराई जा रही हैं। इससे पारदर्शिता और सुविधा दोनों बढ़ी हैं। युवाओं में डिजिटल तकनीक के प्रति रुचि बढ़ रही है और वे तेजी से ऑनलाइन भुगतान प्रणाली को अपना रहे

हैं। आने वाले समय में डिजिटल शिक्षा और डिजिटल भुगतान का संबंध और अधिक मजबूत होगा।

भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ब्लॉकचेन और फिनटेक जैसी नई तकनीकों के विकास से कैशलैस अर्थव्यवस्था और अधिक उन्नत होगी। डिजिटल मुद्रा और स्मार्ट बैंकिंग प्रणाली आर्थिक गतिविधियों को नई दिशा प्रदान करेंगी। लेकिन इसके साथ साइबर सुरक्षा और डेटा गोपनीयता की चुनौतियाँ भी बढ़ेंगी। इसलिए तकनीकी विकास के साथ-साथ मजबूत कानूनी और सुरक्षा ढाँचे की आवश्यकता होगी।

कैशलैस अर्थव्यवस्था पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक हो सकती है। मुद्रा छापने में कागज, स्याही और अन्य संसाधनों का उपयोग होता है। यदि नकद मुद्रा का उपयोग कम होगा, तो प्राकृतिक संसाधनों की बचत होगी। इसके अतिरिक्त बैंकिंग और प्रशासनिक कार्यों में कागज का उपयोग कम होने से पर्यावरण संरक्षण को भी बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार कैशलैस व्यवस्था आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी योगदान दे सकती है।

हालांकि यह भी सत्य है कि पूरी तरह कैशलैस अर्थव्यवस्था की कल्पना अभी व्यावहारिक नहीं है। भारत की बड़ी आबादी आज भी नकद लेन-देन पर निर्भर है। कई वरिष्ठ नागरिक और कम शिक्षित लोग डिजिटल तकनीक के उपयोग में कठिनाई महसूस करते हैं। इसलिए नकद और डिजिटल दोनों व्यवस्थाओं के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। धीरे-धीरे जागरूकता और तकनीकी विकास के माध्यम से ही कैशलैस अर्थव्यवस्था को व्यापक रूप से सफल बनाया जा सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि कैशलैस अर्थव्यवस्था आधुनिक भारत के विकास की महत्वपूर्ण आवश्यकता बन चुकी है। यह आर्थिक पारदर्शिता, सुविधा, सुरक्षा और तेज गति प्रदान करती है। डिजिटल भुगतान प्रणाली ने लोगों के जीवन को सरल बनाया है और देश की अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है। हालांकि साइबर अपराध, डिजिटल साक्षरता की कमी और तकनीकी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, लेकिन जागरूकता, मजबूत सुरक्षा व्यवस्था और सरकारी प्रयासों के माध्यम से इन समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। यदि सरकार, बैंकिंग संस्थान और नागरिक मिलकर जिम्मेदारीपूर्वक डिजिटल तकनीक का उपयोग करें, तो भारत एक सुरक्षित, सशक्त और समृद्ध कैशलैस अर्थव्यवस्था की दिशा में तेजी से आगे बढ़ सकता है।

कृष्ण कान्त
प्रबंधक
अंचल कार्यालय करनाल

सेक्टर-3, कुरुक्षेत्र की नई शाखा का उद्घाटन

दिनांक 02 जनवरी 2026 को यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी आदरणीय श्री अश्वनी कुमार द्वारा सेक्टर-3, कुरुक्षेत्र में यूको बैंक की नई शाखा का विधिवत लोकार्पण एवं उद्घाटन किया गया।

यह शाखा यूको बैंक, करनाल अंचल की 82वीं शाखा है। इस अवसर पर करनाल अंचल के प्रमुख श्री अभिषेक सिंह की गरिमामयी उपस्थिति रही। उनके साथ उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय, अंचल कार्यालय करनाल के वरिष्ठ अधिकारीगण तथा समीपवर्ती शाखाओं के शाखा प्रमुख भी उपस्थित रहे। उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए प्रबंध निदेशक महोदय ने महात्मा गांधी जी के प्रसिद्ध विचारों का उल्लेख किया, जिसमें कहा गया है कि "आज की बैंकिंग व्यवस्था में ग्राहक हम पर निर्भर नहीं है, बल्कि हम ग्राहकों पर निर्भर हैं।" उन्होंने इस विचार को वर्तमान बैंकिंग परिवेश में अत्यंत प्रासंगिक बताते हुए ग्राहक सेवा, विश्वास और पारदर्शिता को बैंकिंग की मूल आत्मा बताया।

इसके साथ ही उन्होंने डिजिटल बैंकिंग के महत्व पर विशेष बल देते हुए ग्राहकों से यूको बैंक की सुरक्षित, सरल एवं आधुनिक डिजिटल सेवाओं का अधिकाधिक उपयोग करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि डिजिटल बैंकिंग से न केवल समय की बचत होती है, बल्कि बैंकिंग सेवाएँ और अधिक सुलभ व प्रभावी बनती हैं। नई शाखा के शुभारंभ से क्षेत्र के ग्राहकों, व्यापारियों एवं आमजन को बेहतर, त्वरित एवं आधुनिक बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध होंगी।

सेक्टर-3, कुरुक्षेत्र की नई शाखा के उद्घाटन के दौरान लिए गए चित्र

'यूको उत्कर्ष' छमाही पत्रिका का विमोचन

आदरणीय श्री अश्वनी कुमार जी, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी तथा श्री अभिषेक सिंह, अंचल प्रमुख, करनाल के कर-कमलों द्वारा करनाल अंचल की छमाही पत्रिका 'यूको उत्कर्ष' का अप्रैल से सितंबर अंक का विमोचन किया गया।

अंचल कार्यालय करनाल में गणतंत्र दिवस

दिनांक 26 जनवरी 2026 को अंचल कार्यालय, करनाल के प्रांगण में गणतंत्र दिवस का पावन एवं गरिमामय समारोह अत्यंत उत्साह और देशभक्ति की भावना के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख, करनाल श्री अभिषेक सिंह, उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय, अंचल कार्यालय करनाल एवं निकटवर्ती शाखाओं के सभी अधिकारीगण, कर्मचारीगण तथा सुरक्षा कर्मी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में एस. डी. आदर्श स्कूल के प्रधानाचार्य, शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं की सक्रिय एवं सराहनीय भागीदारी रही, जिसने समारोह को और भी आकर्षक एवं जीवंत बना दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजारोहण के साथ हुआ, जिसके पश्चात राष्ट्रगान गाया गया और सम्पूर्ण वातावरण देशभक्ति के रंग में रंग गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह द्वारा उपस्थित सभी सदस्यों को गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी गईं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा: "आज का दिन हम सभी भारतीयों के लिए अत्यंत गौरव और सम्मान का प्रतीक है। 26 जनवरी वह ऐतिहासिक दिवस है, जब हमारा संविधान लागू हुआ और भारत एक सम्पूर्ण गणतंत्र राष्ट्र बना। यह केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि हमारे अधिकारों और कर्तव्यों की याद दिलाने वाला दिवस भी है। हमें न केवल अपने अधिकारों का सम्मान करना है, बल्कि अपने कर्तव्यों का भी पूर्ण निष्ठा से पालन करना चाहिए। राष्ट्र निर्माण में प्रत्येक नागरिक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, और हम सभी को अपने कार्यक्षेत्र में ईमानदारी, समर्पण एवं अनुशासन के साथ योगदान देना चाहिए।" इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि गणतंत्र दिवस हमें हमारे लोकतांत्रिक मूल्यों और संविधान के प्रति जागरूक करता है। उन्होंने सभी को अपने कर्तव्यों के प्रति सजग रहने एवं राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने का संदेश दिया। कार्यक्रम के दौरान एस. डी. आदर्श स्कूल के छात्र-छात्राओं द्वारा देशभक्ति गीत, नृत्य एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं, जिन्होंने सभी उपस्थितजनों का मन मोह लिया। इन प्रस्तुतियों में देशप्रेम, एकता और सांस्कृतिक विविधता का सुंदर समन्वय देखने को मिला। बच्चों की प्रतिभा और उत्साह ने पूरे समारोह में ऊर्जा और उल्लास का संचार कर दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थितजनों ने राष्ट्र की एकता, अखंडता और प्रगति के लिए अपना योगदान देने का संकल्प लिया। इस प्रकार यह समारोह अत्यंत सफल, प्रेरणादायक एवं स्मरणीय रहा।

गणतंत्र दिवस के दौरान लिए गए फोटो

परिवर्तन की ओर

भ्रष्टाचार की फैली छाया,
जन-जन ने इसका दुख पाया।
सच की राह हुई है संकरी,
झूठ ने हर चौखट अपनाया।
रिश्वत का जब खेल चले,
ईमानों के दीपक जले।
मेहनत करने वाला रोए,
चालाकी वाले आगे बढ़े।
कागज़-कागज़ घूम रहा है,
सत्य कहीं पर झूम रहा है।
पैसों की इस अंधी दौड़ में,
मानवता का दम घुट रहा है।
न्याय कहीं लाचार खड़ा है,
लोभ यहाँ तलवार बना है।

कर्तव्य भूलकर कुछ लोगों ने,
स्वार्थ को ही संसार कहा है।
लेकिन अब परिवर्तन होगा,
हर मन में जागरण होगा।
ईमानदारी की ज्योति जलाकर,
नव भारत का सृजन होगा।
न रिश्वत लें, न रिश्वत दें,
सच्चाई का पथ हम चुनें।
मिलकर ऐसा समाज बनाएं,
जहाँ सभी सम्मान से जिएं।
आओ मिलकर शपथ उठाएँ,
भ्रष्टाचार को दूर भगाएँ।
सत्य, निष्ठा और परिश्रम से,
भारत का गौरव बढ़ाएँ।

दीपक
प्रबंधक
कटेसरा शाखा

शाखा प्रमुख की समीक्षा बैठक

यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल द्वारा दिनांक 17 जनवरी 2026 को शाखा प्रमुखों की एक महत्वपूर्ण कारोबारी समीक्षा बैठक का आयोजन अत्यंत सुव्यवस्थित एवं प्रभावशाली ढंग से किया गया। इस बैठक में अंचल की विभिन्न शाखाओं से आए शाखा प्रमुखों ने उत्साहपूर्वक एवं सक्रिय रूप से सहभागिता करते हुए अपने-अपने कार्य निष्पादन, उपलब्धियों एवं चुनौतियों को साझा किया।

इस महत्वपूर्ण बैठक की अध्यक्षता अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह ने की। उनके कुशल नेतृत्व, स्पष्ट दृष्टिकोण एवं प्रेरणादायक मार्गदर्शन के कारण बैठक अत्यंत सफल एवं परिणामोन्मुख रही। इस अवसर पर उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय, मुख्य प्रबंधकगण श्री एकाग्र प्रकाश त्यागी, श्री चंदन कुमार, श्री अभिजीत सिंह एवं श्रीमती प्रिया शर्मा की गरिमामयी उपस्थिति ने बैठक की उपयोगिता को और अधिक सुदृढ़ किया।

बैठक के दौरान शाखाओं की समग्र कार्यप्रणाली की विस्तृत समीक्षा की गई, जिसमें व्यवसाय वृद्धि, अग्रिम ऋण, जमा वृद्धि, कासा संवर्धन, क्रॉस-सेलिंग, डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा तथा ग्राहक सेवा की गुणवत्ता जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर गहन एवं सारगर्भित चर्चा हुई। अंचल प्रमुख द्वारा शाखा-वार प्रदर्शन का विश्लेषण करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए गए, ताकि आगामी अवधि में बेहतर परिणाम सुनिश्चित किए जा सकें।

बैठक में कार्य निष्पादन के आधार पर शाखाओं का निष्पक्ष मूल्यांकन किया गया। उन शाखाओं को विशेष रूप से सराहा गया, जिन्होंने निर्धारित लक्ष्यों से अधिक प्रदर्शन करते हुए उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल कीं। श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाओं को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया, जिससे अन्य शाखाओं को भी प्रेरणा मिली और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहन प्राप्त हुआ।

अंत में, सभी शाखा प्रमुखों ने आगामी लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु प्रतिबद्धता व्यक्त की तथा बैंक की प्रगति में सक्रिय योगदान देने का संकल्प लिया। यह बैठक न केवल समीक्षा का मंच बनी, बल्कि मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं सामूहिक विकास का एक प्रभावी माध्यम सिद्ध हुई।

शाखा प्रमुख की समीक्षा बैठक के दौरान लिए गए फोटो

स्वस्थ जीवन की कुंजी : संतुलित आहार, उचित दिनचर्या और बेहतर स्वास्थ्य

मनुष्य के जीवन में स्वास्थ्य का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। यदि व्यक्ति स्वस्थ है, तो वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है, लेकिन यदि स्वास्थ्य अच्छा न हो, तो धन, पद और सुविधाएँ भी जीवन को सुखमय नहीं बना सकतीं। इसलिए कहा जाता है कि "स्वास्थ्य ही सबसे बड़ा धन है।" वर्तमान समय में भागदौड़ भरी जीवनशैली, तनाव, अनियमित खानपान, फास्ट फूड और शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण लोगों का स्वास्थ्य लगातार प्रभावित हो रहा है। पहले की तुलना में आज मधुमेह, उच्च रक्तचाप, मोटापा, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। ऐसे समय में स्वस्थ जीवनशैली अपनाना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

स्वास्थ्य केवल रोगों का अभाव नहीं है, बल्कि शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रूप से पूर्ण स्वस्थ होना ही वास्तविक स्वास्थ्य कहलाता है। एक स्वस्थ व्यक्ति शारीरिक रूप से सक्रिय, मानसिक रूप से संतुलित और सामाजिक रूप से सकारात्मक होता है। अच्छे स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार, पर्याप्त नींद, नियमित व्यायाम, स्वच्छता और सकारात्मक सोच अत्यंत आवश्यक हैं। यदि व्यक्ति अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित कर ले, तो वह अनेक बीमारियों से बच सकता है।

संतुलित आहार अच्छे स्वास्थ्य का आधार है। हमारे शरीर को सही ढंग से कार्य करने के लिए विभिन्न प्रकार के पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। भोजन में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन, खनिज और पानी उचित मात्रा में होना चाहिए। यदि भोजन संतुलित होगा, तो शरीर को आवश्यक ऊर्जा और पोषण प्राप्त होगा। लेकिन आजकल लोग स्वाद और सुविधा के कारण पौष्टिक भोजन की बजाय जंक फूड और तले-भुने पदार्थों का अधिक सेवन करने लगे हैं। इससे शरीर को पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता और अनेक रोग उत्पन्न होने लगते हैं।

प्रोटीन शरीर के विकास और मांसपेशियों की मजबूती के लिए अत्यंत आवश्यक पोषक तत्व है। बच्चों, युवाओं, खिलाड़ियों और बुजुर्गों सभी के लिए प्रोटीन युक्त भोजन आवश्यक होता है। प्रोटीन शरीर की कोशिकाओं के निर्माण और मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। दूध, दही, पनीर, दालें, चना, राजमा, सोयाबीन, मूंगफली, अंडे, मछली और चिकन प्रोटीन के अच्छे स्रोत हैं। शाकाहारी लोगों के लिए दालें और सोयाबीन विशेष रूप से लाभकारी हैं। यदि शरीर को पर्याप्त प्रोटीन न मिले, तो कमजोरी, थकान और मांसपेशियों की समस्या उत्पन्न हो सकती है।

हरी सब्जियाँ और फल स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी होते हैं। इनमें विटामिन, खनिज और

फाइबर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। पालक, मेथी, गाजर, टमाटर, लौकी और ब्रोकली जैसी सब्जियाँ शरीर को पोषण प्रदान करती हैं। इसी प्रकार सेब, केला, संतरा, पपीता और अमरूद जैसे फल शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाते हैं। फल और सब्जियाँ पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में भी सहायक होती हैं। इसलिए प्रतिदिन ताजे फल और हरी सब्जियों का सेवन करना चाहिए।

पानी भी स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। मानव शरीर का बड़ा भाग पानी से बना होता है। पर्याप्त मात्रा में पानी पीने से शरीर में ऊर्जा बनी रहती है और विषैले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं। कम पानी पीने से शरीर में कमजोरी, सिरदर्द और पाचन संबंधी समस्याएँ हो सकती हैं। सामान्यतः एक व्यक्ति को प्रतिदिन पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी पीना चाहिए। गर्मियों में पानी की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है।

स्वास्थ्य के लिए सही समय पर भोजन करना भी आवश्यक है। कई लोग देर रात भोजन करते हैं या भोजन छोड़ देते हैं, जिससे पाचन तंत्र प्रभावित होता है। सुबह का नाश्ता कभी नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि यह पूरे दिन की ऊर्जा का मुख्य स्रोत होता है। नाश्ते में दूध, फल, अंकुरित अनाज और प्रोटीन युक्त भोजन लेना लाभकारी होता है। दोपहर का भोजन संतुलित होना चाहिए तथा रात का भोजन हल्का और समय पर करना चाहिए। अत्यधिक तला-भुना और मसालेदार भोजन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है।

नींद भी अच्छे स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। पर्याप्त और गहरी नींद शरीर और मस्तिष्क को आराम प्रदान करती है। यदि व्यक्ति पर्याप्त नींद नहीं लेता, तो उसका मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है। आजकल मोबाइल फोन और इंटरनेट के कारण लोग देर रात तक जागते रहते हैं, जिससे नींद पूरी नहीं हो पाती। नींद की कमी से तनाव, चिड़चिड़ापन और कमजोरी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। सामान्यतः वयस्क व्यक्ति को प्रतिदिन सात से आठ घंटे की नींद लेना आवश्यक माना जाता है। बच्चों और किशोरों को इससे अधिक नींद की आवश्यकता होती है।

सुबह जल्दी उठना स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी माना जाता है। प्रातःकाल का वातावरण शुद्ध और शांत होता है, जिससे मन और शरीर दोनों को ताजगी मिलती है। सुबह की सैर, योग और व्यायाम शरीर को सक्रिय और स्वस्थ बनाए रखते हैं। नियमित व्यायाम करने से रक्त संचार सही रहता है तथा शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। योग और प्राणायाम मानसिक तनाव को कम करने में भी सहायक होते हैं। आज की भागदौड़ भरी जीवनशैली में योग का महत्व और अधिक बढ़ गया है।

मानसिक स्वास्थ्य भी शारीरिक स्वास्थ्य जितना ही महत्वपूर्ण है। आज तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ तेजी से बढ़ रही हैं। अत्यधिक कार्यभार,

प्रतिस्पर्धा और सामाजिक दबाव लोगों को मानसिक रूप से प्रभावित कर रहे हैं। मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रखने के लिए सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और संतुलित जीवनशैली आवश्यक है। परिवार और मित्रों के साथ समय बिताना, संगीत सुनना, पुस्तक पढ़ना तथा ध्यान करना मानसिक शांति प्रदान करते हैं। यदि व्यक्ति मानसिक रूप से स्वस्थ रहेगा, तो उसका शारीरिक स्वास्थ्य भी बेहतर रहेगा।

स्वच्छता स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण आधार है। व्यक्तिगत और पर्यावरणीय स्वच्छता अनेक बीमारियों से बचाव करती है। भोजन से पहले और बाद में हाथ धोना, स्वच्छ पानी पीना तथा साफ-सफाई का ध्यान रखना आवश्यक है। गंदगी और प्रदूषण के कारण अनेक संक्रामक रोग फैलते हैं। इसलिए घर और आसपास के वातावरण को स्वच्छ रखना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

फास्ट फूड और जंक फूड आधुनिक समय की बड़ी समस्या बन चुके हैं। पिज्जा, बर्गर, कोल्ड ड्रिंक और पैकेट वाले खाद्य पदार्थ स्वादिष्ट तो लगते हैं, लेकिन इनमें पोषण कम और हानिकारक तत्व अधिक होते हैं। इनका अत्यधिक सेवन मोटापा, मधुमेह और हृदय रोग जैसी समस्याओं को बढ़ाता है। विशेष रूप से बच्चों और युवाओं को जंक फूड से बचना चाहिए और घर का पौष्टिक भोजन अधिक खाना चाहिए।

स्वास्थ्य के लिए नियमित दिनचर्या अत्यंत आवश्यक है। समय पर उठना, समय पर भोजन करना और समय पर सोना शरीर की जैविक घड़ी को संतुलित रखता है। अनियमित जीवनशैली शरीर को कमजोर बना देती है। आज कई लोग देर रात तक मोबाइल और टीवी देखते रहते हैं, जिससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित होता है। डिजिटल उपकरणों का सीमित उपयोग करना भी आवश्यक है।

व्यसन और नशे की आदतें स्वास्थ्य के लिए अत्यंत हानिकारक होती हैं। धूम्रपान, शराब और अन्य नशीले पदार्थ शरीर को धीरे-धीरे कमजोर कर देते हैं। इससे फेफड़ों, हृदय और यकृत से संबंधित गंभीर बीमारियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। स्वस्थ जीवन के लिए नशामुक्त जीवनशैली अपनाना आवश्यक है।

बच्चों और युवाओं के लिए खेल-कूद भी अत्यंत आवश्यक है। खेल शरीर को मजबूत बनाते हैं और मानसिक तनाव को कम करते हैं। आज बच्चे मोबाइल और वीडियो गेम में अधिक समय बिताने लगे हैं, जिससे उनकी शारीरिक गतिविधियाँ कम हो रही हैं। माता-पिता और विद्यालयों को बच्चों को खेलों के प्रति प्रेरित करना चाहिए।

बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी आवश्यक है। बढ़ती आयु के साथ शरीर कमजोर होने लगता है और विभिन्न रोगों का खतरा बढ़ जाता है। बुजुर्गों को पौष्टिक भोजन, नियमित व्यायाम और मानसिक

शांति की आवश्यकता होती है। परिवार के सदस्यों को उनके स्वास्थ्य और भावनाओं का ध्यान रखना चाहिए।

महिलाओं का स्वास्थ्य भी परिवार और समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। महिलाएँ परिवार की आधारशिला होती हैं। यदि उनका स्वास्थ्य अच्छा होगा, तो पूरा परिवार स्वस्थ रहेगा। महिलाओं को संतुलित आहार, पर्याप्त आराम और नियमित स्वास्थ्य जांच पर ध्यान देना चाहिए। गर्भवती महिलाओं को विशेष पोषण और देखभाल की आवश्यकता होती है।

आज के समय में स्वास्थ्य बीमा का महत्व भी बढ़ गया है। चिकित्सा सुविधाएँ अत्यधिक महंगी हो चुकी हैं। एक गंभीर बीमारी पूरे परिवार की आर्थिक स्थिति को प्रभावित कर सकती है। इसलिए स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए स्वास्थ्य बीमा उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सकारात्मक सोच भी आवश्यक है। क्रोध, ईर्ष्या और नकारात्मक विचार मानसिक तनाव को बढ़ाते हैं। प्रसन्न और संतुलित मन शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में सहायता करता है। हँसी और खुशी भी स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होती है।

अंततः कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य मानव जीवन की सबसे बड़ी संपत्ति है। यदि व्यक्ति स्वस्थ है, तो वह जीवन की कठिनाइयों का सामना आसानी से कर सकता है। संतुलित आहार, प्रोटीन युक्त भोजन, पर्याप्त नींद, नियमित व्यायाम, स्वच्छता और सकारात्मक सोच अच्छे स्वास्थ्य के मुख्य आधार हैं। आधुनिक जीवन की व्यस्तता के बीच भी यदि हम अपनी दिनचर्या को संतुलित रखें और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें, तो अनेक बीमारियों से बच सकते हैं। स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देनी चाहिए और स्वस्थ जीवनशैली अपनानी चाहिए।

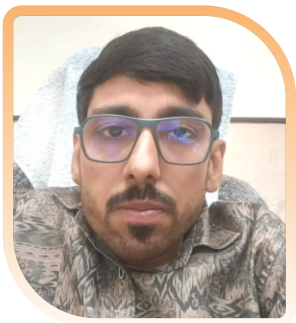

पुनीत नागपाल
वरिष्ठ प्रबंधक
शेरा शाखा

एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल

यूको बैंक, अंचल कार्यालय करनाल द्वारा दिनांक 10 फ़रवरी 2026 को करनाल में एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। यह आयोजन बैंक की विकासोन्मुखी योजनाओं के प्रचार-प्रसार, ग्राहकों से सीधे संवाद तथा कृषि एवं एमएसएमई क्षेत्र को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ।

इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह, उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय एवं विभिन्न शाखाओं से आए अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम की गरिमा उस समय और अधिक बढ़ गई, जब प्रधान कार्यालय से पधारे आदरणीय मुख्य महाप्रबंधक श्री अभिमन्नू रजक ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराई। उनके कर-कमलों द्वारा कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया तथा उनके प्रेरणादायक विचारों ने उपस्थित जनसमूह को अत्यंत प्रेरित किया।

कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत आदरणीय श्री अभिमन्नू रजक को पुष्पगुच्छ एवं स्मृति-चिह्न स्वरूप पुस्तक भेंट कर की गई। इस अवसर पर विभिन्न शाखाओं से आमंत्रित सम्माननीय ग्राहकगण एवं शाखा प्रमुख विशेष रूप से उपस्थित रहे। ग्राहकों ने यूको बैंक के साथ अपने वर्षों पुराने संबंधों, सेवाओं एवं अनुभवों को साझा किया, जो सभी के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहे। इन अनुभवों से यह स्पष्ट हुआ कि यूको बैंक केवल एक वित्तीय संस्थान ही नहीं, बल्कि अपने ग्राहकों के विकास और प्रगति का सशक्त सहभागी भी है। कार्यक्रम के दौरान एमएसएमई एवं कृषि क्षेत्र से संबंधित विभिन्न योजनाओं पर विस्तृत चर्चा की गई। बैंक अधिकारियों द्वारा सरल ऋण प्रक्रियाओं, विभिन्न वित्तीय योजनाओं तथा ग्राहक सहायता कार्यक्रमों की जानकारी दी गई और उपस्थित ग्राहकों के प्रश्नों का संतोषजनक समाधान किया गया।

यह आयोजन बैंक और ग्राहकों के बीच संबंधों को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रगाढ़ बनाने में सहायक सिद्ध हुआ। समग्र रूप से यह कार्यक्रम अत्यंत सफल, उपयोगी एवं प्रेरणादायक रहा।

एमएसएमई एवं कृषि कार्निवल के दौरान लिए गए चित्र

“बाल दिवस” पर शाखाओं द्वारा स्कूलों में कासा कैंप

01.04.2025 से 31.03.2026 तक सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

गृह ऋण

करनाल
हिसार
जुलाना

कार ऋण

महेंद्रगढ
रेवाडी
नारनौल

कोर कृषि ऋण

निसिंग
असंध
कनीना

वित्तीय समावेशन

अटल पेंशन योजना

भिवानी
कलायत
जखौली

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना

जुलाना
सिरसा
कलायत

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना

जखौली
धांड
अटेली मंडी

वसूली में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएं

- पानीपत
- जगाधरी
- नई अनाज मंडी करनाल

बीमा के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

जीवन बीमा	स्वास्थ्य बीमा
बाबरपुर	एस एस एस रोहतक
समालखा	मोहम्मदपुर
जखौली	बाबरपुर

डिजिटल के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

एम बैंकिंग	ई-बैंकिंग	एटीएम कार्ड	व्हाटएप बैंकिंग
जगाधरी	एच वी वी भिवानी	जखौली	मंडी डबबाली
जुलाना	रतिया	जुलाना	करनाल
रादौर	हिसार	फतेहाबाद	रादौर

मर्चेंट –क्यू आर	साउंड बॉक्स	एम बैंकिंग- कॉर्पोरेट	ई-बैंकिंग-कॉर्पोरेट
लोहारू	नीलोखेडी	हिसार	हिसार
बांदाहेडी	बहादुरगढ	रोहतक	नई अनाज मंडी करनाल
जगाधरी	जुलाना	बरवाला	बहादुरगढ

कोर एमएसएमई में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली शाखाएँ

भिवानी | तरावडी | रामनगर

क्रिकेट टूर्नामेंट

अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दिनांक 08 नवम्बर 2025 को एक भव्य एवं उत्साहपूर्ण क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य न केवल कर्मचारियों के बीच आपसी समन्वय एवं टीम भावना को प्रोत्साहित करना था, बल्कि कार्यस्थल के तनाव को कम करते हुए एक सकारात्मक एवं ऊर्जावान वातावरण का निर्माण करना भी था।

इस टूर्नामेंट में करनाल अंचल के विभिन्न शाखाओं एवं कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों को सम्मिलित करते हुए कुल चार टीमों का गठन किया गया। प्रतियोगिता नॉकआउट आधार पर आयोजित की गई, जिसमें प्रत्येक मैच अत्यंत रोमांचकारी, प्रतिस्पर्धात्मक एवं खेल भावना से परिपूर्ण रहा। खिलाड़ियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए अपनी प्रतिभा, समर्पण एवं टीमवर्क का शानदार प्रदर्शन किया।

इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह एवं उप अंचल प्रमुख श्री अविनाश पाण्डेय जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। विशेष बात यह रही कि दोनों वरिष्ठ अधिकारियों ने स्वयं भी मैचों में भाग लेकर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया, जिससे पूरे आयोजन में नई ऊर्जा एवं प्रेरणा का संचार हुआ। उनकी सक्रिय भागीदारी ने यह संदेश दिया कि नेतृत्व केवल मार्गदर्शन तक सीमित नहीं होता, बल्कि टीम के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने में भी विश्वास रखता है।

पूरे टूर्नामेंट के दौरान दर्शकों का उत्साह भी देखने लायक था। सहकर्मियों ने खिलाड़ियों का जोरदार समर्थन किया, जिससे प्रत्येक मैच का रोमांच कई गुना बढ़ गया। खेल के माध्यम से आपसी सहयोग, अनुशासन एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुई। अंततः फाइनल मुकाबला अत्यंत रोमांचक रहा, जिसमें विजेता टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए खिताब अपने नाम किया। विजेता टीम को अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह जी के कर-कमलों द्वारा ट्रॉफी एवं सम्मान प्रदान किया गया। साथ ही सभी प्रतिभागियों के प्रयासों की सराहना करते हुए उन्हें भविष्य में भी इसी उत्साह के साथ भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया।

क्रिकेट टूर्नामेंट के दौरान लिए गए चित्र

अनर्जक आस्ति (एनपीए) की समस्या और समाधान

भारत की अर्थव्यवस्था में बैंकिंग क्षेत्र की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। बैंक केवल धन जमा करने और ऋण देने का कार्य ही नहीं करते, बल्कि देश के आर्थिक विकास की गति को भी निर्धारित करते हैं। उद्योग, व्यापार, कृषि, शिक्षा, आवास और रोजगार जैसे अनेक क्षेत्रों का विकास बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर करता है। बैंक जनता से जमा राशि प्राप्त करके उसे विभिन्न क्षेत्रों में ऋण के रूप में प्रदान करते हैं। जब ऋण समय पर वापस आता रहता है, तो बैंकिंग व्यवस्था सुचारु रूप से चलती रहती है। लेकिन जब उधारकर्ता ऋण की राशि और ब्याज का भुगतान निर्धारित समय पर नहीं करता, तो वह ऋण बैंक के लिए समस्या बन जाता है। ऐसी स्थिति में वह ऋण "अनर्जक आस्ति" अर्थात "एनपीए" कहलाता है। वर्तमान समय में एनपीए भारतीय बैंकिंग व्यवस्था के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक बन चुका है।

एनपीए का अर्थ "नॉन-परफॉर्मिंग एसेट" अर्थात ऐसी परिसंपत्ति से है जो बैंक के लिए आय उत्पन्न करना बंद कर देती है। भारतीय रिजर्व बैंक के नियमों के अनुसार यदि कोई उधारकर्ता 90 दिनों तक ऋण की किस्त या ब्याज का भुगतान नहीं करता, तो वह खाता एनपीए घोषित कर दिया जाता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो ऐसा ऋण जिससे बैंक को आय प्राप्त नहीं हो रही हो, उसे अनर्जक आस्ति कहा जाता है। एनपीए बढ़ने से बैंक की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है तथा उसकी लाभप्रदता प्रभावित होती है।

भारत में एनपीए की समस्या पिछले कुछ वर्षों में अत्यधिक गंभीर रूप धारण कर चुकी है। विशेष रूप से सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक इस समस्या से अधिक प्रभावित हुए हैं। बड़े उद्योगपतियों और कंपनियों द्वारा लिए गए भारी ऋणों का समय पर भुगतान न करने के कारण बैंकों पर आर्थिक दबाव बढ़ा है। कई कंपनियाँ घाटे, भ्रष्टाचार, गलत प्रबंधन तथा आर्थिक मंदी के कारण ऋण चुकाने में असफल रही हैं। परिणामस्वरूप बैंकों की बड़ी राशि एनपीए में बदल गई। इससे बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता और विश्वसनीयता पर भी प्रभाव पड़ा।

एनपीए बढ़ने के अनेक कारण हैं। सबसे पहला कारण ऋण वितरण में उचित जांच और सावधानी का अभाव है। कई बार बैंक पर्याप्त मूल्यांकन किए बिना बड़े ऋण स्वीकृत कर देते हैं। राजनीतिक दबाव और प्रभावशाली व्यक्तियों के हस्तक्षेप के कारण भी कई बार ऐसे ऋण दिए जाते हैं जिनकी वापसी की संभावना कम होती है। इससे बैंक जोखिम में आ जाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ उद्योगपति जानबूझकर ऋण नहीं चुकाते, जिन्हें "जानबूझकर चूककर्ता" कहा जाता है। ऐसे लोग बैंक की राशि का दुरुपयोग करके विदेश चले जाते हैं या अपनी संपत्ति छिपा लेते हैं।

आर्थिक मंदी भी एनपीए बढ़ने का एक महत्वपूर्ण कारण है। जब देश की अर्थव्यवस्था धीमी होती है, तो उद्योगों और व्यापार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उत्पादन घटता है, बिक्री कम होती है और

कंपनियों का लाभ घटने लगता है। ऐसी स्थिति में कंपनियाँ बैंक ऋण चुकाने में असमर्थ हो जाती हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान भी अनेक उद्योग और व्यवसाय प्रभावित हुए, जिससे एनपीए की समस्या और बढ़ गई। छोटे व्यापारियों, किसानों और मध्यम उद्योगों को आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा और वे समय पर ऋण चुकाने में कठिनाई महसूस करने लगे।

कृषि क्षेत्र में भी एनपीए की समस्या देखी जाती है। भारत की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है, लेकिन प्राकृतिक आपदाएँ, सूखा, बाढ़ और मौसम की अनिश्चितता किसानों की आय को प्रभावित करती हैं। कई बार किसान ऋण लेकर खेती करते हैं, लेकिन फसल खराब होने के कारण वे ऋण नहीं चुका पाते। इससे कृषि ऋण भी एनपीए में बदल जाते हैं। सरकार समय-समय पर किसानों के ऋण माफ करती है, लेकिन इससे बैंकिंग व्यवस्था पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है।

एनपीए की समस्या का सबसे बड़ा प्रभाव बैंकिंग क्षेत्र पर पड़ता है। जब ऋण वापस नहीं आता, तो बैंक की आय घट जाती है। बैंक को ऐसे खातों के लिए अतिरिक्त प्रावधान करना पड़ता है, जिससे उसकी लाभप्रदता कम हो जाती है। कई बार बैंकों को घाटे का सामना करना पड़ता है। एनपीए बढ़ने से बैंक नए ऋण देने में भी सावधानी बरतते हैं, जिससे उद्योग और व्यापार प्रभावित होते हैं। इसका सीधा प्रभाव देश की आर्थिक विकास दर पर पड़ता है।

एनपीए का प्रभाव आम जनता पर भी पड़ता है। बैंक जब घाटे में जाते हैं, तो वे जमा राशि पर कम ब्याज देने लगते हैं और ऋण पर ब्याज दर बढ़ा देते हैं। इससे आम नागरिकों और छोटे व्यापारियों को कठिनाई होती है। कई बार सरकार को सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों को बचाने के लिए पूंजी उपलब्ध करानी पड़ती है। यह राशि अंततः करदाताओं के धन से आती है। इस प्रकार एनपीए की समस्या पूरे समाज और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है।

एनपीए बढ़ने से बैंकिंग प्रणाली की विश्वसनीयता भी प्रभावित होती है। यदि बैंक लगातार घाटे में रहें, तो निवेशकों और ग्राहकों का विश्वास कम हो सकता है। बैंकिंग प्रणाली किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। यदि यह कमजोर होगी, तो आर्थिक विकास की गति भी प्रभावित होगी। इसलिए एनपीए की समस्या का समाधान अत्यंत आवश्यक है।

सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक ने एनपीए की समस्या से निपटने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। इस कानून के माध्यम से ऋण न चुकाने वाली कंपनियों के विरुद्ध त्वरित कार्रवाई की जा सकती है। यदि कोई कंपनी ऋण चुकाने में असमर्थ होती है, तो उसकी संपत्ति बेचकर बैंकों की राशि वसूल की जाती है। इससे ऋण वसूली की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हुई है।

ऋण वसूली अधिकरण (DRT) और सरफेसी अधिनियम (SARFAESI Act) भी एनपीए की समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरफेसी अधिनियम के अंतर्गत बैंक बिना अदालत की अनुमति के ऋण न चुकाने वाले उधारकर्ताओं की संपत्ति जब्त कर सकते हैं। इससे बैंकों को ऋण वसूली में सहायता मिलती है। इसके अतिरिक्त "बैड बैंक" की अवधारणा भी लागू की गई है, जिसके अंतर्गत खराब ऋणों को अलग संस्था में स्थानांतरित किया जाता है ताकि बैंक अपने सामान्य कार्यों पर ध्यान केंद्रित कर सकें।

एनपीए की समस्या के समाधान के लिए बैंकों को ऋण वितरण प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी तथा मजबूत बनाना होगा। ऋण स्वीकृत करने से पहले उधारकर्ता की आर्थिक स्थिति, व्यवसाय की व्यवहार्यता और पुनर्भुगतान क्षमता का सही मूल्यांकन आवश्यक है। केवल प्रभाव और राजनीतिक दबाव के आधार पर ऋण नहीं दिए जाने चाहिए। बैंक अधिकारियों को भी जिम्मेदारी और पारदर्शिता के साथ कार्य करना चाहिए।

तकनीकी विकास भी एनपीए नियंत्रण में सहायक हो सकता है। आधुनिक डेटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से बैंकों को संभावित जोखिमों की जानकारी पहले से मिल सकती है। डिजिटल निगरानी प्रणाली के माध्यम से ऋण खातों की नियमित समीक्षा की जा सकती है। इससे समस्या को प्रारंभिक स्तर पर ही नियंत्रित किया जा सकता है।

वित्तीय अनुशासन और नैतिकता भी एनपीए नियंत्रण के लिए आवश्यक हैं। उधारकर्ताओं को यह समझना चाहिए कि बैंक का धन जनता की जमा पूंजी है। ऋण समय पर चुकाना उनका नैतिक और कानूनी दायित्व है। जानबूझकर ऋण न चुकाने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जानी चाहिए ताकि अन्य लोगों में भी जिम्मेदारी की भावना विकसित हो।

कृषि और छोटे उद्योगों के लिए विशेष सहायता योजनाएँ भी आवश्यक हैं। किसानों और छोटे व्यापारियों को उचित मार्गदर्शन, बीमा सुविधा और आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे आर्थिक संकट की स्थिति में भी ऋण चुकाने में सक्षम रहें। सरकार को ऐसी नीतियाँ बनानी चाहिए जिससे रोजगार और उत्पादन बढ़े तथा उद्योगों की आर्थिक स्थिति मजबूत हो।

एनपीए की समस्या केवल बैंकिंग क्षेत्र की समस्या नहीं है, बल्कि यह पूरे देश की अर्थव्यवस्था से जुड़ा हुआ विषय है। यदि बैंक आर्थिक रूप से मजबूत होंगे, तभी वे उद्योगों, व्यापार और विकास परियोजनाओं को पर्याप्त वित्तीय सहायता प्रदान कर पाएंगे। इसलिए सरकार, बैंकिंग संस्थान, उद्योगपति और आम नागरिक सभी को मिलकर इस समस्या के समाधान की दिशा में कार्य करना होगा।

आज आवश्यकता इस बात की है कि बैंकिंग व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और अनुशासन को बढ़ावा दिया जाए। ऋण वितरण से लेकर वसूली तक प्रत्येक प्रक्रिया को अधिक प्रभावी और उत्तरदायी बनाना होगा। साथ ही जनता में भी

वित्तीय जागरूकता बढ़ानी होगी ताकि लोग बैंकिंग प्रणाली के महत्व को समझें और जिम्मेदारीपूर्वक व्यवहार करें।

अंततः कहा जा सकता है कि अनर्जक आस्ति अर्थात एनपीए भारतीय बैंकिंग व्यवस्था के सामने एक गंभीर चुनौती है। यह समस्या बैंक की लाभप्रदता, आर्थिक विकास और जनता के विश्वास को प्रभावित करती है। लेकिन उचित नीतियों, मजबूत कानूनी व्यवस्था, पारदर्शी बैंकिंग प्रणाली और वित्तीय अनुशासन के माध्यम से इस समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। यदि सरकार, बैंक और समाज मिलकर जिम्मेदारीपूर्वक प्रयास करें, तो भारतीय बैंकिंग प्रणाली को अधिक मजबूत, सुरक्षित और विश्वसनीय बनाया जा सकता है। यही देश की आर्थिक प्रगति और समृद्धि के लिए अत्यंत आवश्यक है।

दीपक रामरैणा
प्रबंधक
अंचल कार्यालय करनाल

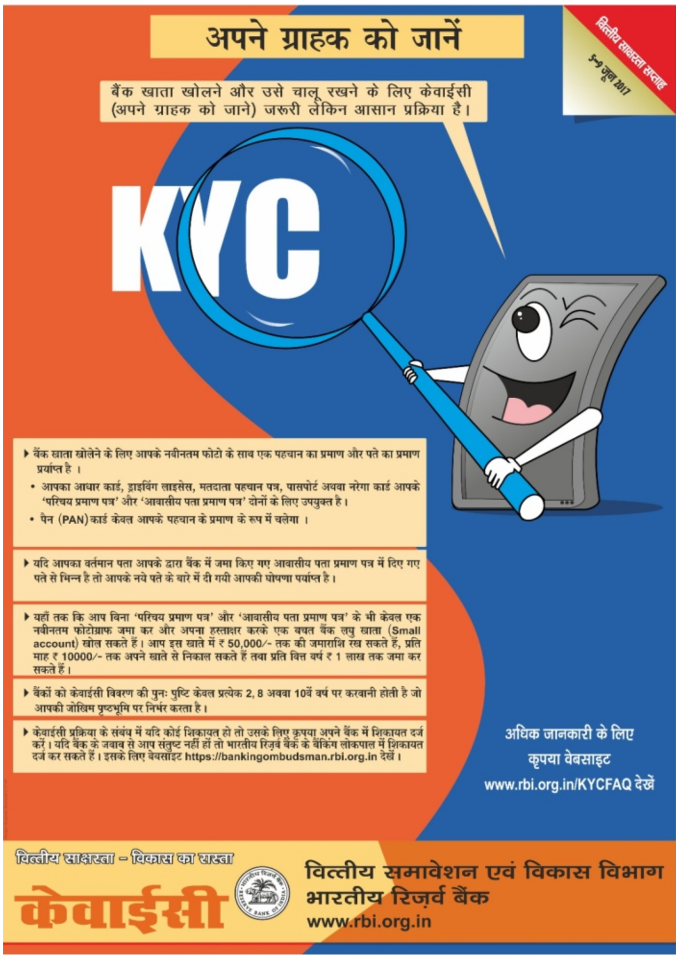

सुर्खियों में यूको बैंक

दिसम्बर को समाप्त तिमाही में यूको बैंक का शानदार प्रदर्शन

करनाल, 17 जनवरी (बी.एन.): यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सी.ई.ओ. अश्विनी कुमार द्वारा आज वित्तीय वर्ष 2025-26 की 31 दिसम्बर को समाप्त तृतीय तिमाही में बैंक के वित्तीय परिणामों की घोषणा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की गई जिसका प्रसारण यूको बैंक के प्रधान कार्यालय कोलकाता से किया गया जिसमें यूको बैंक के समस्त अंचल कार्यालयों ने भाग लिया।

अंचल कार्यालय करनाल भी अंचल प्रमुख एवं समस्त स्टाफ सहित वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से प्रैस वार्ता से जुड़ा।

अश्विनी कुमार ने सभी प्रैस संवाददाताओं के सवालों का जवाब दिया तथा बताया कि द्वितीय तिमाही में बैंक का कुल कारोबार वर्ष-दर-वर्ष 13.23 प्रतिशत बढ़कर 5,36,398 करोड़ रुपए हो गया। सकल ऋण वर्ष-दर-वर्ष 16.56 प्रतिशत बढ़कर 2,30,702 करोड़ तथा कुल जमा वर्ष-दर-वर्ष 10.85 प्रतिशत बढ़कर 3,05,697 करोड़ रुपए हो गया।

तिमाही में बैंक का वर्ष-दर-शुद्ध लाभ 15,65 प्रतिशत की बढ़ौतरी के साथ दिसम्बर 2024 के 639 करोड़ से बढ़कर दिसम्बर 2025 में 739 करोड़ रुपए हो गया, परिचालन लाभ वर्ष-दर-र्ष 5.93 प्रतिशत बढ़कर 1680 करोड़ रुपए हो गया एवं नैट एनपीए 27 बीपीएस घट कर 0.36 प्रतिशत रह गया। रिटेल, कृषि और एम.एस.एम.ई. (रैम) क्षेत्रों में अग्रिम-बैंक का रैम सेगमेंट वर्ष-दर-वर्ष 25.86 प्रतिशत बढ़कर 1,43.919करोड़ हो गया।

खुदरा अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 28.18 प्रतिशत की वृद्धि, एम.एस.एम.ई. अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 23.56 प्रतिशत की वृद्धि तथा कृषि अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 24.69 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

यूको बैंक का लाभ 16 प्रतिशत बढ़कर 740 करोड़ रुपए रहा

नई दिल्ली, 17 जनवरी (प.स.): सार्वजनिक क्षेत्र के यूको बैंक का शुद्ध लाभ दिसंबर 2025 को समाप्त चालू वित्त वर्ष की तीसरी तिमाही में 16 प्रतिशत बढ़कर 740 करोड़ रुपए हो गया। मुख्य आय में वृद्धि और गैर-निष्पादित आस्तियों में कमी से बैंक के मुनाफे को बल मिला है।

जानकारी के अनुसार आलोच्य तिमाही के दौरान बैंक की कुल आय बढ़कर 7,521 करोड़ रुपए हो गई, जो पिछले साल इसी अवधि में 7,406 करोड़ रुपए थी। वहीं, बैंक की ब्याज आय भी पिछले साल के 6,220 करोड़ से बढ़कर 6,652 करोड़ रुपए पर आ गई। आलोच्य तिमाही में बैंक की शुद्ध ब्याज आय (एन.आई.आई.) 11.27 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2,646 करोड़ रुपए रही।

दिसंबर को समाप्त तिमाही में यूको बैंक का शानदार प्रदर्शन

सवेरा न्यूज/स.ह.

नई दिल्ली, 17 जनवरी : आज दिनांक 17.01.2026 को यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं सी.ई.ओ. अश्वनी कुमार द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 की 31 दिसम्बर को समाप्त तृतीय तिमाही में बैंक के वित्तीय परिणामों की घोषणा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से की गई जिसका प्रसारण यूको बैंक के प्रधान कार्यालय कोलकाता से किया गया जिसमें यूको बैंक के समस्त अंचल कार्यालयों ने भाग लिया। अंचल कार्यालय करनाल भी अंचल प्रमुख एवं समस्त स्टाफ सहित वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से प्रेस वार्ता से जुड़ा। अश्वनी कुमार ने सभी प्रेस संवाददाताओं के सवालों का जवाब दिया तथा संबोधित करते हुए बताया कि द्वितीय तिमाही में बैंक का कुल कारोबार वर्ष-दर-वर्ष 13.23% बढ़कर 5,36,398 करोड़ हो गया। सकल ऋण वर्ष-दर-वर्ष 16.56% बढ़कर, 2,30,702 करोड़ तथा कुल जमा वर्ष-दर-वर्ष 10.85% बढ़कर 3,05,697 करोड़ हो गया। तिमाही में बैंक का वर्ष-दर-शुद्ध लाभ 15,65% की बढ़ोतरी के साथ दिसंबर 2024 के 639 करोड़ से बढ़कर दिसंबर 2025 में 739 करोड़ रुपये हो गया, परिचालन लाभ वर्ष-दर-र्ष 5.93% बढ़कर 1680 करोड़ रुपए हो गया एवं नेट एनपीए 27 बीपीएस घट कर 0.36 % रह गया। रिटेल, कृषि और एम.एस.एम.ई. (रैम) क्षेत्रों में अग्रिम - बैंक का रैम सेगमेंट वर्ष-दर-वर्ष 25.86% बढ़कर 1,43.919करोड़ हो गया। खुदरा अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 28.18% की वृद्धि, एम. एस. एम.ई. अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 23,.56% की वृद्धि तथा कृषि अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष 24.69% की वृद्धि हुई।

UCO BANK REPORTS STRONG FINANCIAL PERFORMANCE FOR DECEMBER 2025 QUARTER

Chandigarh: UCO Bank has reported a robust financial performance for the quarter and nine months ended 31 December 2025. The Bank posted a net profit of ₹739 crore for the quarter, registering a year-on-year growth of 15.65%, while operating profit stood at ₹1,680 crore, showing a growth of 5.93%. As on 31 December 2025, the Bank's total business reached ₹5.53 lakh crore, recording a growth of 13.25% year-on-year. Gross advances increased to ₹2.43 lakh crore, while total deposits rose to ₹3.10 lakh crore. The Retail, Agriculture and MSME (RAM) portfolio witnessed strong momentum, growing by 25.86% to ₹1.43 lakh crore.

यूको बैंक का लाभ 16 प्रतिशत बढ़कर 740 करोड़ रुपए रहा

दिसम्बर को समाप्त तिमाही में यूको बैंक का शानदार प्रदर्शन

दिसंबर को समाप्त तिमाही में यूको बैंक का शानदार प्रदर्शन

अंचल कार्यालय करनाल में दीपावली उत्सव

शाखाओं में दीपावली उत्सव

अंचल कार्यालय, करनाल द्वारा दीपावली के शुभ अवसर पर करनाल अंचल की सभी शाखाओं के लिए एक आकर्षक एवं सृजनात्मक रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का विषय "यूको डिजिटल एवं कासा वित्तीय समावेशन" रखा गया, जिसका उद्देश्य कर्मचारियों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ बैंक की प्रमुख योजनाओं एवं डिजिटल पहल को जन-जन तक पहुँचाने का संदेश देना था।

इस प्रतियोगिता में अंचल की सभी शाखाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रत्येक शाखा ने अपने-अपने परिसर में निर्धारित थीम के अनुरूप आकर्षक, संदेशप्रधान एवं रंग-बिरंगी रंगोलियाँ बनाईं। इन रंगोलियों के माध्यम से डिजिटल बैंकिंग, कासा वृद्धि एवं वित्तीय समावेशन जैसे महत्वपूर्ण विषयों को अत्यंत सुंदर एवं प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। सभी शाखाओं द्वारा तैयार की गई रंगोलियों के छायाचित्र अंचल कार्यालय को भेजे गए, जिनका मूल्यांकन किया गया।

प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर करनाल शाखा को प्रथम स्थान, डाबरा चौक शाखा को द्वितीय स्थान तथा शीला बाईपास, रोहतक शाखा को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। विजेता शाखाओं को उनके सराहनीय प्रयास, सृजनात्मकता एवं विषय की उत्कृष्ट प्रस्तुति के लिए सम्मानित किया गया।

समग्र रूप से यह रंगोली प्रतियोगिता अत्यंत सफल, प्रेरणादायक एवं उत्साहवर्धक रही, जिसने दीपावली के उत्सव को और अधिक आनंदमय बनाने के साथ-साथ कर्मचारियों के बीच सहभागिता, नवाचार एवं टीम भावना को भी सुदृढ़ किया।

दीपावली उत्सव पर शाखाओं द्वारा भेजे गए फोटो

दीपावली उत्सव पर शाखाओं द्वारा भेजे गए फोटो

नजरिया: समस्याओं में अवसर की तलाश

कहा जाता है कि हम दुनिया को वैसी नहीं देखते जैसी वह है, बल्कि वैसी देखते हैं जैसे हम स्वयं हैं। हमारा नजरिया वह अदृश्य शक्ति है जो हमारे जीवन की दिशा तय करती है। विशेषकर हमारे कार्यालय जैसे गतिशील परिवेश में, जहाँ बैंकिंग और जनसेवा का दबाव होता है, वहाँ समस्याओं का आना स्वाभाविक है। प्रश्न यह नहीं है कि समस्या कितनी बड़ी है, प्रश्न यह है कि उस समय हमारा मानसिक दृष्टिकोण कैसा है?जब भी कोई बाधा आती है, हमारा मस्तिष्क दो रास्तों में से एक चुनता है:शिकायत का रास्ता: "यह मेरे साथ ही क्यों हुआ?" यह सोच हमें तनाव और थकान की ओर ले जाती है।समाधान का रास्ता: "मैं इसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग कैसे कर सकता हूँ?" यह सोच हमें अवसर की ओर ले जाती है।वैज्ञानिक रूप से भी, जब हम समाधान पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में रचनात्मक विचार उत्पन्न होने लगते हैं।कार्यालय में अक्सर हमें कठिन ग्राहक, तकनीकी समस्याएँ या सीमित संसाधनों का सामना करना पड़ता है। एक सकारात्मक नजरिया वाला कर्मचारी इन परिस्थितियों को 'बोझ' नहीं बल्कि 'ट्रेनिंग' मानता है। वह जानता है कि:कठिन ग्राहक उसे 'धैर्य' सिखाते हैं क्योंकि अक्सर बैंक की शाखाओं में ऐसे ग्राहक आते हैं जो बहुत परेशान या क्रोधित होते हैं। एक साधारण नजरिया इसे 'सिरदर्द' मान सकता है, लेकिन एक सकारात्मक बैंकर के लिए यह अपनी 'Communication Skills' और 'Problem Solving' क्षमता को निखारने का एक शानदार अवसर है। जब आप एक नाराज ग्राहक को संतुष्ट करके वापस भेजते हैं, तो आप न केवल बैंक की साख बचाते हैं, बल्कि एक वफादार ग्राहक भी बनाते हैं।तकनीकी बाधाएँ उसे 'नवाचार' सिखाती हैं जैसे तकनीकी बदलावों या 'System Downtime' को कई बार बाधा माना जाता है। लेकिन यदि हम अपना नजरिया बदलें, तो यही समय होता है जब हम ग्राहकों को अन्य डिजिटल माध्यमों के लिए शिक्षित कर सकते हैं। एक समस्या (भीड़) का समाधान (डिजिटल साक्षरता) बन जाता है।कार्य का दबाव उसे 'समय प्रबंधन' (Time Management) सिखाता है। अक्सर बैंक की शाखाओं में 'पिक ऑवर्स' (जैसे महीने की शुरुआत या क्लोजिंग के समय) के दौरान काम का भारी दबाव होता है। ऐसे में एक आम नजरिया यह होता है कि हम घबरा जाते हैं और काम के ढेर को देखकर तनाव में आ जाते हैं।एक कुशल कर्मचारी कार्य के इस दबाव को 'प्राथमिकता तय करने के अवसर' (Opportunity to Prioritize) के रूप में देखता है। समय प्रबंधन का अर्थ केवल घड़ी को देखना नहीं, बल्कि कार्यों को उनके महत्व के अनुसार क्रमबद्ध करना है।जब मेज पर ढेर सारी फाइलें और सामने ग्राहकों की कतार हो, तो 'समय प्रबंधन' का नजरिया रखने वाला व्यक्ति सबसे पहले उन कार्यों को चुनता है जो अति-आवश्यक (Critical) हैं। वह जटिल कार्यों को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँट देता है और प्रत्येक कार्य के लिए एक

मानसिक समय-सीमा तय कर लेता है।इस नजरिये से कार्य करने पर न केवल काम समय पर पूरा होता है, बल्कि दबाव के बीच भी मानसिक स्पष्टता बनी रहती है। दबाव का यही समय होता है जब आपकी 'मल्टी-टास्किंग' क्षमता और निर्णय लेने की गति निखरती है।दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों और आविष्कारों का जन्म संकट के समय ही हुआ है। जब आवागमन कठिन था, तब पहिये का आविष्कार हुआ; जब सूचना पहुँचाना समस्या थी, तब डाक और इंटरनेट का जन्म हुआ। यदि हम अपनी दिनचर्या में आने वाली छोटी-छोटी समस्याओं को एक 'प्रोजेक्ट' की तरह देखें, तो हम पाएंगे कि हर समस्या अपने साथ एक सुधार का सुझाव लेकर आती है। शब्दों का चयन बदलें: "मुझे यह काम करना पड़ेगा" की जगह "मुझे यह काम करने का अवसर मिला है" कहें।10-सेकंड का नियम: किसी भी समस्या पर प्रतिक्रिया देने से पहले 10 सेकंड रुकें और सोचें कि इसका सकारात्मक पहलू क्या हो सकता है। छोटा ब्रेक लें: जब तनाव अधिक हो, तो अपनी दृष्टि बदलें; थोड़ी देर टहलें या गहरी सांस लें। अंत में, यह याद रखना आवश्यक है कि अवसर कभी भी शोर मचाकर नहीं आते, वे अक्सर 'समस्या' के भेष में छिपे होते हैं। जो व्यक्ति समस्या की परतें हटाकर उसके भीतर छिपे अवसर को देख लेता है, वही असली विजेता है। "उलझनों में भी रास्तों की तलाश कर, तू मुश्किलों में भी जीत का एहसास कर।"

गुरिंदर कौर
मुख्य प्रबंधक , संसाधन विभाग
अंचल कार्यालय, करनाल

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप-समिति का निरीक्षण

दिनांक 17.02.2026 को संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिति द्वारा अंचल कार्यालय, करनाल का राजभाषीय निरीक्षण नई दिल्ली में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह निरीक्षण अत्यंत गरिमामय एवं प्रेरणादायी वातावरण में आयोजित किया गया, जिसमें राजभाषा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग तथा कार्यालयीन कार्यों में राजभाषा के संवर्धन से संबंधित विभिन्न पहलुओं की विस्तृत समीक्षा की गई।

इस महत्वपूर्ण अवसर पर आदरणीय श्री घनश्याम परमार, महाप्रबंधक महोदय की उपस्थिति रही। निरीक्षण में अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह जी सहित अंचल कार्यालय, करनाल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के समन्वित प्रयास, उत्कृष्ट तैयारी तथा सकारात्मक सहभागिता के फलस्वरूप निरीक्षण अत्यंत सफल एवं सराहनीय रहा। यह अवसर अंचल कार्यालय, करनाल के लिए गौरव, प्रेरणा एवं उपलब्धि का प्रतीक सिद्ध हुआ।

माननीय सांसदगण के भव्य स्वागत के दौरान लिए गए छायाचित्र

सफल राजभाषीय निरीक्षण उपरांत प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए गौरवपूर्ण क्षण

माननीय सांसदगण द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी का निरीक्षण एवं अवलोकन

राजभाषा प्रदर्शनी

जीवन की सुरक्षा कवच : स्वास्थ्य एवं जीवन बीमा की बढ़ती आवश्यकता

आधुनिक जीवन अत्यधिक व्यस्त, प्रतिस्पर्धात्मक और अनिश्चितताओं से भरा हुआ है। आज मनुष्य तकनीकी रूप से जितना उन्नत हुआ है, उतनी ही नई चुनौतियाँ भी उसके सामने खड़ी हुई हैं। बढ़ती महंगाई, बदलती जीवनशैली, प्रदूषण, तनाव और अनेक प्रकार की बीमारियों ने जीवन को पहले की तुलना में अधिक असुरक्षित बना दिया है। एक छोटी-सी बीमारी या दुर्घटना भी व्यक्ति और उसके परिवार की आर्थिक स्थिति को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती है। ऐसे समय में बीमा केवल एक आर्थिक सुविधा नहीं, बल्कि जीवन की सुरक्षा का महत्वपूर्ण आधार बन चुका है। विशेष रूप से स्वास्थ्य बीमा और जीवन बीमा आज प्रत्येक व्यक्ति और परिवार की आवश्यकता बन गए हैं।

बीमा का अर्थ है—संभावित जोखिमों से आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना। जब कोई व्यक्ति किसी बीमा कंपनी को निर्धारित राशि अर्थात प्रीमियम देता है, तो कंपनी भविष्य में होने वाली किसी दुर्घटना, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में आर्थिक सहायता प्रदान करती है। इस प्रकार बीमा व्यक्ति और परिवार को आर्थिक संकट से बचाने का कार्य करता है। आज बीमा केवल अमीर वर्ग तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए आवश्यक हो गया है।

स्वास्थ्य बीमा आधुनिक समय की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। वर्तमान समय में चिकित्सा सुविधाएँ अत्यधिक महंगी हो चुकी हैं। किसी गंभीर बीमारी के उपचार में लाखों रुपये खर्च हो जाते हैं। मध्यम वर्ग और निम्न आय वर्ग के लिए यह खर्च उठाना अत्यंत कठिन होता है। कई परिवार बीमारी के कारण अपनी वर्षों की जमा पूंजी खो देते हैं। ऐसे समय में स्वास्थ्य बीमा आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। यदि किसी व्यक्ति के पास स्वास्थ्य बीमा है, तो अस्पताल में भर्ती होने, ऑपरेशन, दवाइयों और अन्य चिकित्सा खर्चों का बड़ा भाग बीमा कंपनी द्वारा वहन किया जाता है। इससे व्यक्ति को आर्थिक तनाव कम होता है और वह बेहतर उपचार प्राप्त कर पाता है।

आज के समय में जीवनशैली से जुड़ी बीमारियाँ तेजी से बढ़ रही हैं। मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, कैंसर और मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ आम हो गई हैं। प्रदूषण और असंतुलित खानपान ने स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों को और बढ़ा दिया है। कोविड-1 9 महामारी ने भी यह स्पष्ट कर दिया कि स्वास्थ्य संकट कभी भी उत्पन्न हो सकता है। महामारी के दौरान लाखों लोगों को भारी चिकित्सा खर्च का सामना करना पड़ा। जिन लोगों के पास स्वास्थ्य बीमा था, उन्हें आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत कम कठिनाई हुई। इस अनुभव ने स्वास्थ्य बीमा के महत्व को और अधिक बढ़ा दिया है।

स्वास्थ्य बीमा का एक बड़ा लाभ यह है कि यह समय पर और बेहतर चिकित्सा सुविधा प्राप्त करने में सहायता करता है। कई बार लोग आर्थिक कारणों से उचित इलाज नहीं करा पाते, जिससे बीमारी और गंभीर हो जाती है। लेकिन बीमा होने पर

व्यक्ति अच्छे अस्पतालों में उपचार प्राप्त कर सकता है। आज अधिकांश बीमा कंपनियाँ कैशलेस सुविधा भी प्रदान करती हैं, जिसमें बीमाधारक को तुरंत नकद भुगतान करने की आवश्यकता नहीं होती। अस्पताल और बीमा कंपनी के बीच सीधे भुगतान की व्यवस्था होती है। इससे मरीज और उसके परिवार को बड़ी राहत मिलती है।

स्वास्थ्य बीमा केवल व्यक्तिगत सुरक्षा ही नहीं देता, बल्कि पूरे परिवार की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। फैमिली फ्लोटर पॉलिसी के माध्यम से एक ही योजना में परिवार के सभी सदस्यों को शामिल किया जा सकता है। इससे कम प्रीमियम में व्यापक सुरक्षा प्राप्त होती है। आज बढ़ती चिकित्सा लागत को देखते हुए स्वास्थ्य बीमा प्रत्येक परिवार की प्राथमिक आवश्यकता बन चुका है।

जीवन बीमा भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना स्वास्थ्य बीमा। जीवन अनिश्चित है और किसी दुर्घटना या असामयिक मृत्यु की स्थिति में परिवार पर आर्थिक संकट आ सकता है। यदि परिवार का मुख्य कमाने वाला व्यक्ति अचानक संसार छोड़ दे, तो परिवार के सामने आजीविका, बच्चों की शिक्षा और दैनिक खर्च जैसी समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं। जीवन बीमा ऐसी परिस्थितियों में परिवार को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। बीमाधारक की मृत्यु होने पर बीमा कंपनी उसके परिवार को निर्धारित राशि देती है, जिससे परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रह सके।

जीवन बीमा केवल मृत्यु के बाद सहायता देने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह बचत और निवेश का भी एक अच्छा साधन है। कई जीवन बीमा योजनाओं में परिपक्वता के बाद धनराशि वापस मिलती है। इससे व्यक्ति भविष्य की आवश्यकताओं जैसे बच्चों की शिक्षा, विवाह या वृद्धावस्था के लिए बचत कर सकता है। इस प्रकार जीवन बीमा सुरक्षा और बचत दोनों का संतुलित माध्यम बन जाता है।

आज जीवन बीमा के अनेक प्रकार उपलब्ध हैं। टर्म इंश्योरेंस, एंडोमेंट प्लान, मनी बैक पॉलिसी, यूनिट लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान (ULIP) तथा पेंशन योजनाएँ लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार तैयार की गई हैं। टर्म इंश्योरेंस कम प्रीमियम में अधिक सुरक्षा प्रदान करता है, जबकि अन्य योजनाएँ सुरक्षा के साथ निवेश का लाभ भी देती हैं। व्यक्ति अपनी आर्थिक स्थिति और आवश्यकताओं के अनुसार उपयुक्त योजना का चयन कर सकता है।

बीमा का महत्व केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाता है। बीमा कंपनियाँ लोगों से प्राप्त प्रीमियम राशि का निवेश विभिन्न विकास परियोजनाओं में करती हैं। इससे उद्योग, व्यापार और अवसंरचना विकास को प्रोत्साहन मिलता है। बीमा क्षेत्र रोजगार सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लाखों लोग बीमा कंपनियों, एजेंसियों और संबंधित सेवाओं में कार्यरत हैं।

भारत में बीमा के प्रति जागरूकता धीरे-धीरे बढ़ रही है, लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में लोग बीमा से

वंचित हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से बीमा के प्रति जागरूकता का अभाव है। कई लोग बीमा को अनावश्यक खर्च समझते हैं, जबकि वास्तव में यह भविष्य की सुरक्षा का साधन है। लोगों को यह समझने की आवश्यकता है कि बीमा संकट के समय आर्थिक सहारा प्रदान करता है। सरकार और बीमा कंपनियों को जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को बीमा के महत्व के बारे में शिक्षित करना चाहिए।

भारत सरकार ने समाज के कमजोर वर्गों को बीमा सुरक्षा प्रदान करने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना जैसी योजनाएँ कम प्रीमियम में व्यापक सुरक्षा प्रदान करती हैं। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से गरीब परिवारों को स्वास्थ्य बीमा सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। इन योजनाओं ने लाखों लोगों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान की है और समाज में बीमा के महत्व को बढ़ाया है।

बीमा क्षेत्र में तकनीकी विकास ने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। आज लोग ऑनलाइन माध्यम से बीमा पॉलिसी खरीद सकते हैं, प्रीमियम जमा कर सकते हैं और दावे की प्रक्रिया पूरी कर सकते हैं। डिजिटल तकनीक ने बीमा सेवाओं को सरल और पारदर्शी बनाया है। मोबाइल एप और ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से लोग आसानी से विभिन्न योजनाओं की तुलना कर सकते हैं। इससे बीमा सेवाएँ आम जनता तक अधिक तेजी से पहुँच रही हैं।

हालांकि बीमा के अनेक लाभ हैं, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। कई बार लोग बिना पूरी जानकारी के गलत पॉलिसी खरीद लेते हैं। कुछ बीमा एजेंट केवल कमीशन के उद्देश्य से योजनाएँ बेचते हैं, जिससे ग्राहकों को उचित लाभ नहीं मिल पाता। दावा निपटान की प्रक्रिया में देरी भी लोगों के लिए परेशानी का कारण बनती है। इसलिए बीमा कंपनियों को पारदर्शिता और ग्राहक सेवा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। लोगों को भी पॉलिसी खरीदने से पहले उसकी शर्तों को ध्यानपूर्वक समझना चाहिए।

स्वास्थ्य और जीवन बीमा का महत्व भविष्य में और अधिक बढ़ने वाला है। बढ़ती जनसंख्या, महंगाई और चिकित्सा खर्चों को देखते हुए बीमा के बिना आर्थिक सुरक्षा की कल्पना कठिन होती जा रही है। आधुनिक जीवन में जोखिम निरंतर बढ़ रहे हैं और ऐसे में बीमा व्यक्ति को मानसिक शांति और आत्मविश्वास प्रदान करता है। यदि किसी व्यक्ति को यह विश्वास हो कि संकट की स्थिति में उसका परिवार आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेगा, तो वह अधिक आत्मविश्वास के साथ जीवन जी सकता है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में तनाव और असुरक्षा की भावना लगातार बढ़ रही है। नौकरी की अनिश्चितता, स्वास्थ्य संबंधी जोखिम और आकस्मिक दुर्घटनाएँ कभी भी जीवन को प्रभावित कर सकती हैं। बीमा इन अनिश्चितताओं के बीच

सुरक्षा का मजबूत आधार प्रदान करता है। यह व्यक्ति को केवल आर्थिक सहायता ही नहीं देता, बल्कि मानसिक संतुलन और सामाजिक सुरक्षा भी प्रदान करता है।

समाज में बीमा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना अत्यंत आवश्यक है। लोगों को यह समझना चाहिए कि बीमा विलासिता नहीं, बल्कि आवश्यकता है। जैसे हम अपने घर, वाहन और अन्य वस्तुओं की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं, उसी प्रकार अपने जीवन और स्वास्थ्य की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। विशेष रूप से युवा वर्ग को प्रारंभिक अवस्था में ही बीमा योजनाओं से जुड़ना चाहिए, क्योंकि कम आयु में प्रीमियम अपेक्षाकृत कम होता है और लंबे समय तक सुरक्षा मिलती है।

महिलाओं के लिए भी स्वास्थ्य और जीवन बीमा अत्यंत आवश्यक है। आज महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं और परिवार की आर्थिक जिम्मेदारियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसलिए उनकी आर्थिक और स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। महिलाओं के लिए विशेष बीमा योजनाएँ भी उपलब्ध हैं, जो मातृत्व और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं।

बीमा केवल व्यक्तिगत लाभ का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक स्थिरता का भी आधार है। यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति बीमा सुरक्षा से जुड़ा हो, तो आकस्मिक परिस्थितियों में आर्थिक संकट का प्रभाव कम किया जा सकता है। इससे समाज अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बनता है। बीमा सामाजिक और आर्थिक विकास की प्रक्रिया को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होता है।

अंततः कहा जा सकता है कि स्वास्थ्य एवं जीवन बीमा आधुनिक जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बन चुके हैं। यह व्यक्ति और परिवार को आर्थिक सुरक्षा, मानसिक शांति और भविष्य के प्रति विश्वास प्रदान करते हैं। स्वास्थ्य बीमा महंगे चिकित्सा खर्चों से सुरक्षा देता है, जबकि जीवन बीमा परिवार को आर्थिक संकट से बचाता है। वर्तमान समय की अनिश्चितताओं को देखते हुए प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उचित बीमा योजना अवश्य अपनानी चाहिए। यदि समाज में बीमा के प्रति जागरूकता बढ़ेगी और लोग इसे अपनी प्राथमिकता बनाएंगे, तो एक सुरक्षित, सशक्त और आत्मनिर्भर समाज का निर्माण संभव होगा।

रविन्द्र कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय करनाल

सेक्टर-14, हिसार की नई शाखा का उद्घाटन

दिनांक 05 मार्च 2026 को यूको बैंक के अंचल कार्यालय, करनाल के अंतर्गत सेक्टर-14, हिसार में बैंक की नवीन शाखा का भव्य उद्घाटन समारोह अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। यह अवसर बैंक के विस्तार, वित्तीय समावेशन तथा ग्राहकों को आधुनिक एवं सुलभ बैंकिंग सेवाएँ प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिद्ध हुआ।

नवीन शाखा का उद्घाटन भारत सरकार के वित्तीय सेवा विभाग के सचिव आदरणीय श्री एम. नागराजू, आईएएस द्वारा फीता काटकर किया गया। इस अवसर पर उन्होंने अपने प्रेरणादायी संबोधन में भारत सरकार की वित्तीय समावेशन नीतियों, डिजिटल बैंकिंग के बढ़ते महत्व तथा आमजन तक सुलभ एवं सुरक्षित बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने में बैंकों की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आधुनिक तकनीक आधारित बैंकिंग सेवाएँ देश की आर्थिक प्रगति एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

अपने संबोधन में उन्होंने यूको बैंक द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं एवं डिजिटल उत्पादों की सराहना की। उन्होंने बैंक की डिजिटल बैंकिंग सेवाओं जैसे मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई आधारित भुगतान प्रणाली, क्यूआर कोड भुगतान सुविधा, डिजिटल ऋण सेवाएँ तथा ग्राहकों को त्वरित एवं सुरक्षित बैंकिंग अनुभव प्रदान करने वाले आधुनिक उत्पादों को बैंकिंग क्षेत्र में महत्वपूर्ण पहल बताया। साथ ही उन्होंने बैंक द्वारा एमएसएमई, कृषि, स्वरोजगार, महिला सशक्तिकरण एवं सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से किए जा रहे कार्यों की भी प्रशंसा की।

समारोह में अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह ने उपस्थित ग्राहकों एवं गणमान्य अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह नई शाखा क्षेत्र के ग्राहकों को अत्याधुनिक बैंकिंग सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ-साथ स्थानीय व्यापार, उद्योग एवं आर्थिक गतिविधियों को नई गति प्रदान करेगी। उन्होंने बताया कि बैंक ग्राहकों की सुविधा हेतु डिजिटल एवं ग्राहक-केंद्रित सेवाओं को निरंतर विस्तार दे रहा है, जिससे बैंकिंग सेवाएँ अधिक सरल, पारदर्शी एवं प्रभावी बन सकें।

सेक्टर-14, हिसार की नई शाखा के उद्घाटन के दौरान लिए गए चित्र

21 फ़रवरी - अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के अवसर पर अंचल कार्यालय, करनाल में "शब्द ज्ञान प्रतियोगिता" का सफल आयोजन अत्यंत उत्साह एवं सहभागिता के साथ किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य मातृभाषा के प्रति सम्मान एवं जागरूकता को प्रोत्साहित करना तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में भाषा ज्ञान, अभिव्यक्ति क्षमता एवं हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देना था।

इस अवसर पर कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा प्रतियोगिता के माध्यम से अपनी भाषा दक्षता, शब्द भंडार एवं भाषाई कौशल का प्रभावशाली प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम के दौरान मातृभाषा के महत्व, हिंदी के संवर्धन तथा दैनिक कार्यालयीन कार्यों में सरल एवं प्रभावी भाषा प्रयोग की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला गया। प्रतियोगिता ने न केवल प्रतिभागियों के ज्ञानवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, बल्कि उनमें भाषा के प्रति आत्मविश्वास, रचनात्मकता एवं सकारात्मक प्रतिस्पर्धा की भावना को भी सुदृढ़ किया।

यह आयोजन अत्यंत सफल एवं प्रेरणादायी रहा तथा सभी प्रतिभागियों ने इसे ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी अनुभव बताया। कार्यक्रम ने मातृभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक सराहनीय पहल के रूप में अपनी विशेष छाप छोड़ी।

अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के दौरान लिए गए चित्र

अंचल कार्यालय में लोहड़ी एवं मकर संक्रांति पर्व

अंचल कार्यालय, करनाल में पारंपरिक उल्लास एवं सांस्कृतिक सौहार्द के साथ लोहड़ी एवं मकर संक्रांति उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम उत्साह, उमंग एवं पारिवारिक वातावरण से परिपूर्ण रहा, जिसमें अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह सहित अंचल कार्यालय, करनाल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार लकड़ियों को प्रज्वलित कर लोहड़ी उत्सव मनाने के साथ किया गया। प्रज्वलित अग्नि के चारों ओर उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सुख, समृद्धि एवं खुशहाली की कामना करते हुए उत्सव में सहभागिता की। इस अवसर पर सभी स्टाफ सदस्यों को मक्के के फुल्ले, मूँगफली, रेवड़ी एवं अन्य पारंपरिक प्रसाद वितरित किया गया। उपस्थित सभी सदस्यों ने इन पारंपरिक सामग्रियों को अग्नि में अर्पित कर लोहरी की परंपरा का पालन किया तथा तत्पश्चात प्रसाद स्वरूप उनका आनंद लिया।

उत्सव के दौरान ढोल की मधुर एवं उत्साहवर्धक थापों ने पूरे वातावरण को आनंदमय बना दिया। ढोल की धुन पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पारंपरिक नृत्य कर उत्सव का भरपूर आनंद लिया। सभी स्टाफ सदस्यों ने पूरे उत्साह एवं ऊर्जा के साथ सहभागिता करते हुए आपसी भाईचारे, सहयोग एवं सांस्कृतिक एकता की भावना को और अधिक सुदृढ़ किया।

इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री अभिषेक सिंह ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को लोहड़ी एवं मकर संक्रांति की शुभकामनाएँ दी। लोहड़ी एवं मकर संक्रांति उत्सव का यह आयोजन अत्यंत आनंददायक, प्रेरणादायी एवं यादगार रहा।

अंचल कार्यालय में लोहड़ी एवं मकर संक्रांति पर्व के दौरान लिए गए चित्र

स्क्रीन के जाल में बचपन : बच्चों में बढ़ती सोशल मीडिया की लत

आधुनिक युग तकनीक और इंटरनेट का युग है। आज मोबाइल फोन, कंप्यूटर और इंटरनेट मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुके हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब और स्नैपचैट ने संचार और मनोरंजन के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। इन प्लेटफॉर्मों ने दुनिया को एक-दूसरे के करीब ला दिया है और जानकारी प्राप्त करना पहले की तुलना में कहीं अधिक आसान हो गया है। लेकिन तकनीक का यह विकास जहां अनेक सुविधाएँ लेकर आया है, वहीं दूसरी ओर कई गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न कर रहा है। विशेष रूप से बच्चों और किशोरों में सोशल मीडिया की बढ़ती लत आज समाज के लिए चिंता का विषय बन चुकी है। यह समस्या केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चों के मानसिक, शारीरिक, शैक्षिक और सामाजिक विकास को भी प्रभावित कर रही है।

बचपन जीवन का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। इसी समय बच्चों के व्यक्तित्व, विचार और आदतों का निर्माण होता है। पहले बच्चे अपना अधिकांश समय खेल-कूद, पढ़ाई, परिवार और मित्रों के साथ बिताते थे। लेकिन आज स्थिति तेजी से बदल रही है। मोबाइल फोन और इंटरनेट ने बच्चों की दिनचर्या को पूरी तरह बदल दिया है। आज कई बच्चे घंटों तक सोशल मीडिया पर वीडियो देखते रहते हैं, गेम खेलते हैं, चैटिंग करते हैं और विभिन्न ऑनलाइन गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं। धीरे-धीरे यह आदत लत का रूप ले लेती है और बच्चे वास्तविक जीवन से दूर होने लगते हैं।

सोशल मीडिया की लत का सबसे बड़ा कारण स्मार्टफोन और इंटरनेट की आसान उपलब्धता है। आज लगभग प्रत्येक घर में स्मार्टफोन मौजूद है। माता-पिता भी बच्चों को कम उम्र में ही मोबाइल फोन दे देते हैं। कई बार बच्चे रोना बंद करें या शांत रहें, इसलिए उन्हें मोबाइल पकड़ा दिया जाता है। धीरे-धीरे बच्चे मोबाइल और सोशल मीडिया के इतने अभ्यस्त हो जाते हैं कि वे इसके बिना असहज महसूस करने लगते हैं। ऑनलाइन वीडियो, रील्स और गेम्स बच्चों को आकर्षित करते हैं और वे घंटों तक स्क्रीन के सामने बैठे रहते हैं।

कोविड-1 9 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के कारण बच्चों का स्क्रीन समय और अधिक बढ़ गया। पढ़ाई के लिए मोबाइल और इंटरनेट का उपयोग आवश्यक हो गया था। लेकिन इसी दौरान कई बच्चे सोशल मीडिया और ऑनलाइन गेमिंग की ओर अधिक आकर्षित हो गए। लॉकडाउन के समय घरों में सीमित रहने के कारण बच्चों का सामाजिक संपर्क कम हो गया और उन्होंने अपना अधिक समय इंटरनेट पर बिताना शुरू कर दिया। इसका प्रभाव आज भी देखने को मिल रहा है।

सोशल मीडिया की लत बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव डालती है। लगातार स्क्रीन देखने और आभासी दुनिया में रहने से बच्चों में चिड़चिड़ापन, तनाव और अवसाद जैसी समस्याएँ

बढ़ रही हैं। कई बच्चे सोशल मीडिया पर मिलने वाली प्रतिक्रियाओं और लाइक्स को अपनी पहचान का आधार मानने लगते हैं। यदि उन्हें अपेक्षित प्रतिक्रिया नहीं मिलती, तो वे निराश हो जाते हैं। कुछ बच्चे दूसरों की जीवनशैली देखकर हीन भावना का शिकार भी हो जाते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास कम होता है और मानसिक संतुलन प्रभावित होता है।

सोशल मीडिया बच्चों की एकाग्रता और अध्ययन क्षमता को भी प्रभावित कर रहा है। आज कई बच्चे पढ़ाई के समय भी बार-बार मोबाइल देखने लगते हैं। नोटिफिकेशन और संदेश उनका ध्यान भंग करते रहते हैं। परिणामस्वरूप उनकी पढ़ाई प्रभावित होती है और परीक्षा परिणाम कमजोर होने लगते हैं। कई बच्चे देर रात तक मोबाइल का उपयोग करते हैं, जिससे उनकी नींद पूरी नहीं हो पाती। नींद की कमी के कारण स्मरण शक्ति और सीखने की क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

शारीरिक स्वास्थ्य पर भी सोशल मीडिया की लत का गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। पहले बच्चे मैदानों में खेलते थे, दौड़ते थे और शारीरिक गतिविधियों में भाग लेते थे। लेकिन अब वे अधिक समय मोबाइल और कंप्यूटर के सामने बैठकर बिताते हैं। इससे मोटापा, आंखों की कमजोरी, सिरदर्द और गर्दन दर्द जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। लंबे समय तक स्क्रीन देखने से बच्चों की दृष्टि प्रभावित हो रही है। इसके अतिरिक्त शारीरिक गतिविधियों की कमी के कारण बच्चों का शारीरिक विकास भी प्रभावित हो रहा है।

सोशल मीडिया बच्चों के सामाजिक व्यवहार को भी बदल रहा है। पहले बच्चे परिवार और मित्रों के साथ अधिक समय बिताते थे, जिससे उनमें सामाजिक गुण विकसित होते थे। लेकिन अब कई बच्चे वास्तविक बातचीत से बचने लगे हैं। वे आभासी दुनिया में अधिक सक्रिय रहते हैं और वास्तविक संबंधों से दूर होते जा रहे हैं। इससे उनमें अकेलापन और सामाजिक असहजता बढ़ रही है। कई बच्चे परिवार के सदस्यों के साथ समय बिताने के बजाय मोबाइल में व्यस्त रहते हैं, जिससे पारिवारिक संबंधों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बच्चों में सोशल मीडिया की लत बढ़ने का एक बड़ा कारण अभिभावकों की व्यस्तता भी है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक जीवन में माता-पिता अपने कार्यों में इतने व्यस्त हो गए हैं कि वे बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते। कई बार बच्चे अकेलापन महसूस करते हैं और मनोरंजन के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं। यदि माता-पिता बच्चों के साथ समय बिताएं, उनसे संवाद करें और उन्हें खेल-कूद तथा रचनात्मक गतिविधियों के लिए प्रेरित करें, तो इस समस्या को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

सोशल मीडिया के माध्यम से बच्चों पर गलत सामग्री का प्रभाव पड़ने का खतरा भी बढ़ गया है।

इंटरनेट पर हिंसा, अश्लीलता और गलत विचारों से संबंधित सामग्री आसानी से उपलब्ध होती है। कई बार बच्चे अनजाने में ऐसी सामग्री देख लेते हैं, जो उनके मानसिक विकास के लिए हानिकारक होती है। इसके अतिरिक्त साइबर बुलिंग और ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी समस्याएँ भी तेजी से बढ़ रही हैं। कुछ बच्चे सोशल मीडिया पर मजाक और अपमान का शिकार होते हैं, जिससे वे मानसिक तनाव में आ जाते हैं।

आज कई बच्चे सोशल मीडिया पर प्रसिद्ध होने की इच्छा रखने लगे हैं। वे लाइक्स, फॉलोअर्स और लोकप्रियता पाने के लिए अजीब और खतरनाक वीडियो बनाने का प्रयास करते हैं। कई बार यह प्रवृत्ति उन्हें जोखिम भरे कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। सोशल मीडिया पर वायरल होने की चाहत बच्चों के व्यवहार और सोच को प्रभावित कर रही है। वे वास्तविक उपलब्धियों की बजाय आभासी लोकप्रियता को अधिक महत्व देने लगे हैं।

हालांकि सोशल मीडिया के कुछ सकारात्मक पक्ष भी हैं। इसके माध्यम से बच्चे नई जानकारी प्राप्त कर सकते हैं, शैक्षिक सामग्री देख सकते हैं और दुनिया से जुड़ सकते हैं। कई ऑनलाइन प्लेटफॉर्म शिक्षा और रचनात्मकता को बढ़ावा देते हैं। लेकिन समस्या तब उत्पन्न होती है जब इसका उपयोग सीमित और संतुलित न होकर अत्यधिक हो जाता है। इसलिए सोशल मीडिया का उपयोग नियंत्रित और उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए।

बच्चों को सोशल मीडिया की लत से बचाने के लिए परिवार की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। माता-पिता को बच्चों के साथ समय बिताना चाहिए और उन्हें मोबाइल के स्थान पर खेल-कूद, पुस्तक पढ़ने तथा अन्य रचनात्मक गतिविधियों के लिए प्रेरित करना चाहिए। बच्चों के स्क्रीन समय की सीमा तय करनी चाहिए। छोटे बच्चों को बिना आवश्यकता मोबाइल फोन नहीं देना चाहिए। यदि बच्चे इंटरनेट का उपयोग करें, तो अभिभावकों को उनकी गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिए।

विद्यालय भी इस समस्या के समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। स्कूलों में बच्चों को डिजिटल संतुलन और साइबर सुरक्षा के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए। खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और समूह गतिविधियों को बढ़ावा देकर बच्चों को वास्तविक दुनिया से जोड़ना आवश्यक है। शिक्षकों और अभिभावकों को मिलकर बच्चों में अनुशासन और संतुलित तकनीकी उपयोग की आदत विकसित करनी चाहिए।

सरकार और समाज की भी इस दिशा में जिम्मेदारी है। बच्चों के लिए सुरक्षित इंटरनेट वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों को बच्चों के लिए हानिकारक सामग्री पर नियंत्रण करना चाहिए। सरकार को साइबर सुरक्षा और डिजिटल जागरूकता से संबंधित

अभियान चलाने चाहिए। मीडिया और समाज को भी बच्चों के स्वस्थ मानसिक विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए।

आज आवश्यकता इस बात की है कि तकनीक का उपयोग संतुलित और जिम्मेदारीपूर्ण तरीके से किया जाए। सोशल मीडिया पूरी तरह बुरा नहीं है, लेकिन इसका अत्यधिक उपयोग निश्चित रूप से हानिकारक है। बच्चों को यह समझाना आवश्यक है कि वास्तविक जीवन का महत्व आभासी दुनिया से कहीं अधिक है। उन्हें प्रकृति, खेल, पुस्तकें और पारिवारिक संबंधों से जोड़ना अत्यंत आवश्यक है।

बच्चों का बचपन अत्यंत अनमोल होता है। यदि वे कम उम्र में ही सोशल मीडिया की लत का शिकार हो जाएंगे, तो उनका शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास प्रभावित होगा। इसलिए माता-पिता, शिक्षक और समाज को मिलकर बच्चों को स्वस्थ और संतुलित जीवन की ओर प्रेरित करना चाहिए। बच्चों को प्रेम, मार्गदर्शन और सही वातावरण देकर ही इस समस्या से बचाया जा सकता है।

अंततः कहा जा सकता है कि बच्चों में बढ़ती सोशल मीडिया की लत आधुनिक समाज की गंभीर चुनौती बन चुकी है। यह समस्या केवल तकनीक से संबंधित नहीं है, बल्कि यह बच्चों के भविष्य और समाज के विकास से जुड़ी हुई है। यदि समय रहते इस समस्या पर ध्यान नहीं दिया गया, तो आने वाली पीढ़ियाँ मानसिक और सामाजिक रूप से कमजोर हो सकती हैं। इसलिए आवश्यक है कि सोशल मीडिया का उपयोग सीमित, संतुलित और उद्देश्यपूर्ण बनाया जाए। जागरूकता, पारिवारिक सहयोग और सही मार्गदर्शन के माध्यम से ही बच्चों को सोशल मीडिया की लत से बचाया जा सकता है तथा उनके उज्ज्वल और स्वस्थ भविष्य का निर्माण किया जा सकता है।

सुगंध कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
राई शाखा

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत जागरूकता रैली का आयोजन

अंचल कार्यालय करनाल द्वारा सतर्कता जागरूकता सप्ताह (27 अक्टूबर से 2 नवंबर 2025) के अवसर पर आमजन में सतर्कता, पारदर्शिता एवं भ्रष्टाचार-निरोध के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु एक भव्य जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में ईमानदारी, नैतिकता तथा जनहितकारी प्रशासन के महत्व को रेखांकित करना था।

रैली का शुभारंभ अंचल कार्यालय परिसर से किया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख अभिषेक सिंह, उप अंचल प्रमुख अविनाश पाण्डेय सहित अंचल कार्यालय करनाल के सभी अधिकारी एवं कर्मचारीगण उत्साहपूर्वक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के प्रारंभ में सतर्कता जागरूकता सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी उपस्थितजनों को ईमानदारी एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य करने का संदेश दिया गया।

रैली के दौरान सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने हाथों में सतर्कता संबंधी संदेशों से युक्त बैनर, पोस्टर एवं तख्तियां लेकर करनाल शहर के प्रमुख मार्गों पर भ्रमण किया। रैली ने शहर के विभिन्न मुख्य बाजारों, सार्वजनिक स्थलों तथा व्यस्त मार्गों से होकर गुजरते हुए आम नागरिकों को भ्रष्टाचार के विरुद्ध जागरूक रहने तथा निष्पक्षता एवं सत्यनिष्ठा को अपनाने का संदेश दिया। रैली के दौरान "सत्यनिष्ठा अपनाएं, भ्रष्टाचार मिटाएं", "सतर्क नागरिक, सशक्त राष्ट्र" तथा "ईमानदारी ही सर्वोत्तम नीति है" जैसे नारों के माध्यम से लोगों का ध्यान आकर्षित किया गया।

रैली में सम्मिलित कर्मचारियों ने नागरिकों को यह भी बताया कि सार्वजनिक संस्थानों में पारदर्शिता बनाए रखने में प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इस प्रकार अंचल कार्यालय करनाल द्वारा आयोजित यह जागरूकता रैली न केवल बैंक कर्मचारियों के लिए प्रेरणादायक रही, बल्कि आमजन में भी सतर्कता एवं नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता फैलाने में सफल सिद्ध हुई।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत जागरूकता रैली के दौरान लिए गए चित्र

शाखाओं में सतर्कता जागरूकता सप्ताह

अंचल कार्यालय करनाल में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में स्मरण शक्ति प्रतियोगिता का आयोजन

अंचल कार्यालय करनाल में विश्व हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर करनाल अंचल की विभिन्न शाखाओं से आए शाखा प्रमुखों के लिए एक रोचक एवं ज्ञानवर्धक स्मरण शक्ति प्रतियोगिता आयोजित की गई। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों की स्मरण क्षमता, एकाग्रता तथा हिंदी भाषा के प्रति उनकी रुचि को प्रोत्साहित करना था।

कार्यक्रम का आयोजन अंचल कार्यालय करनाल के सभागार में किया गया। इस अवसर पर अंचल प्रमुख अभिषेक सिंह की गरिमामयी उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित यह कार्यक्रम अंचल कार्यालय करनाल में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में एक सार्थक एवं प्रेरणादायक पहल सिद्ध हुआ।

आज का इंसान

हाथों में दुनिया सिमटी है,
मोबाइल की एक स्क्रीन में,
पर रिश्तों की गर्माहट खोई,
व्यस्तता की मशीन में।
हजारों मित्र दिखाई देते,
सोशल मीडिया के मेले में,
लेकिन मन की बात कहे कौन,
जीवन के इस अकेले में।
ज्ञान का सागर बहता हर पल,
इंटरनेट की धाराओं में,
फिर भी उलझा मानव भटक
रहा,
झूठी खबरों की राहों में।
ऊँची-ऊँची इमारतें उठीं,
सपनों ने भी पंख लगाए,
लेकिन प्रकृति की हरियाली को,
हमने खुद ही दूर भगाए।
दौड़ रहा है हर कोई आगे,
मंजिल की पहचान नहीं,
पैसा, पद और शोहरत तो है,
मन को फिर भी चैन नहीं।
आओ थोड़ा रुककर सोचें,
जीवन का असली सार क्या है,
मानवता, प्रेम और सद्भाव ही,
सफलता का आधार क्या है।
तकनीक रहे, विकास भी हो,
पर संस्कार न खो जाएँ,
नए युग की इस चकाचौंध में,
अपने मूल्य न सो जाएँ।

हिमांशु असीजा
प्रबंधक
एसएमई एवं कृषि हब, करनाल

एमएसएमई एवं एग्री मीट का सफल आयोजन

दिनांक 22.12.2025 को बहादुरगढ़ क्षेत्र में ग्राहकों एवं उद्यमियों के साथ संवाद स्थापित करने तथा बैंक की विभिन्न योजनाओं की जानकारी साझा करने के उद्देश्य से एक एमएसएमई एवं एग्री मीट का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा कृषि क्षेत्र से जुड़े ग्राहकों को बैंक द्वारा उपलब्ध कराई जा रही वित्तीय योजनाओं, ऋण सुविधाओं एवं व्यवसाय विस्तार के अवसरों से अवगत कराना था।

कार्यक्रम में प्रधान कार्यालय से आदरणीय श्री मनीष कुमार, महाप्रबंधक की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने अपने संबोधन में एमएसएमई एवं कृषि क्षेत्र को देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ बताते हुए बैंक की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने उपस्थित ग्राहकों को बैंक की विभिन्न ऋण योजनाओं, डिजिटल बैंकिंग सुविधाओं तथा वित्तीय समावेशन से संबंधित पहल की विस्तृत जानकारी प्रदान की।

इस अवसर पर अंचल कार्यालय करनाल के अंचल प्रमुख अभिषेक सिंह, उप अंचल प्रमुख अविनेश पाण्डेय तथा बहादुरगढ़ शाखा की शाखा प्रमुख गगन भल्ला सहित सहायक शाखा प्रमुख आदर्श कुमार भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम में बैंक के अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण भी सम्मिलित हुए।

मीट में बहादुरगढ़ क्षेत्र के अनेक सम्मानित ग्राहक, उद्यमी, कृषक तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानों से जुड़े गणमान्य व्यक्ति बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। ग्राहकों ने बैंक अधिकारियों के साथ सीधे संवाद कर विभिन्न ऋण योजनाओं, कार्यशील पूंजी, कृषि ऋण, तथा व्यवसाय विस्तार हेतु उपलब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त की। इस संवादात्मक सत्र ने ग्राहकों एवं बैंक के बीच संबंधों को और अधिक सुदृढ़ बनाया।।

कार्यक्रम के समापन पर उपस्थित ग्राहकों को धन्यवाद स्वरूप स्मृतिचिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। यह सम्मान ग्राहकों के बैंक के प्रति विश्वास एवं सहयोग के प्रति आभार व्यक्त करने हेतु प्रदान किया गया। इस अवसर ने बैंक एवं ग्राहकों के बीच आत्मीय संबंधों को और अधिक मजबूत किया।

इस प्रकार बहादुरगढ़ क्षेत्र में आयोजित एमएसएमई एवं एग्री मीट सफलतापूर्वक संपन्न हुआ तथा बैंक की व्यवसायिक योजनाओं, ग्राहक सेवा और वित्तीय जागरूकता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

पुस्तक समीक्षा

हिंदी साहित्य के अमर रचनाकारजयशंकर प्रसाद की कहानी“गुंडा”केवल एक साहित्यिक कृति नहीं, बल्कि मानवीय चरित्र की जटिलताओं और सामाजिक मूल्यों की गहन पड़ताल है। यह कहानी उस धारणा को चुनौती देती है जिसमें किसी व्यक्ति का मूल्यांकन केवल उसके बाहरी व्यवहार अथवा सामाजिक पहचान के आधार पर कर लिया जाता है।

कहानी का मुख्य पात्रनन्हकू सिंहसमाज की दृष्टि में एक“गुंडा” है, किंतु लेखक उसके व्यक्तित्व के अनेक ऐसे आयाम उद्घाटित करते हैं जो उसे साधारण व्यक्ति से कहीं अधिक ऊँचा और मानवीय बनाते हैं। बाहरी रूप से कठोर दिखाई देने वाला यह पात्र भीतर से संवेदनशील, साहसी, उदार तथा त्यागमय है। यही विरोधाभास इस कहानी को विशेष बनाता है और पाठक को सोचने के लिए विवश करता है कि वास्तविक महानता व्यक्ति के कर्मों और मानवीय मूल्यों में निहित होती है, न कि उसकी सामाजिक छवि में।

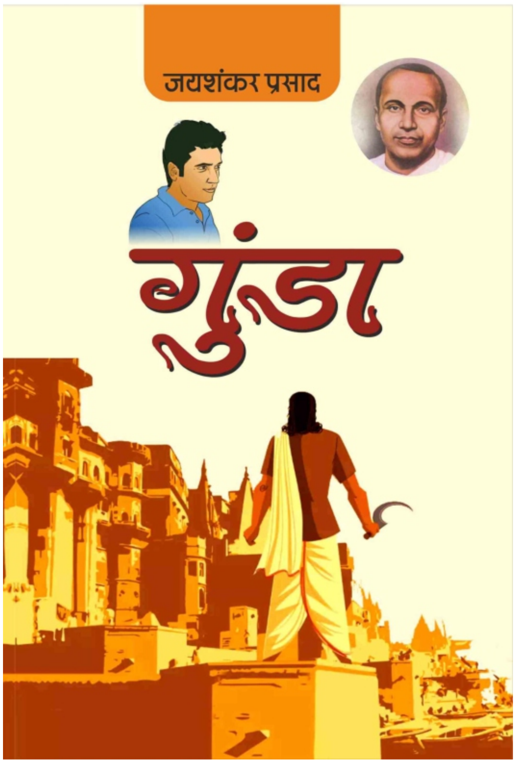

जयशंकर प्रसाद ने काशी की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कहानी में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों, सत्ता-संघर्ष और जनजीवन का सजीव चित्रण मिलता है। लेखक की भाषा अत्यंत साहित्यिक, चित्रात्मक और भावपूर्ण है, जो पाठक को घटनाओं के साथ जोड़कर रखती है।

“गुंडा” का सबसे सशक्त पक्ष इसका चरित्र-चित्रण है। नन्हकू सिंह का व्यक्तित्व यह संदेश देता है कि साहस, करुणा और आत्मसम्मान किसी भी मनुष्य को महान बना सकते हैं। कहानी में प्रेम, त्याग, स्वाभिमान और न्याय जैसे मानवीय मूल्यों का अत्यंत प्रभावी समावेश है। लेखक ने यह भी दर्शाया है कि समाज कई बार व्यक्तियों को गलत पहचान दे देता है, जबकि उनके वास्तविक गुण उससे बिल्कुल भिन्न होते हैं।

यह कहानी आज के समय में भी उतनी ही प्रासंगिक प्रतीत होती है जितनी अपने रचना-काल में रही होगी। वर्तमान समाज में भी हम अक्सर लोगों को उनके बाहरी स्वरूप, पेशे या सामाजिक छवि के आधार पर आंक लेते हैं। “गुंडा” हमें सिखाती है कि किसी व्यक्ति के वास्तविक व्यक्तित्व को समझने के लिए उसके भीतर झाँकना आवश्यक है।

साहित्यिक दृष्टि से यह कहानी हिंदी कथा-साहित्य की उत्कृष्ट रचनाओं में गिनी जाती है। इसमें रोमांच, संवेदना, सामाजिक यथार्थ और आदर्शवाद का सुंदर संतुलन दिखाई देता है। पाठक कहानी के अंत तक नन्हकू सिंह के व्यक्तित्व से गहरे रूप में जुड़ जाता है और उसके प्रति सम्मान का भाव अनुभव करता है।

अंततः कहा जा सकता है कि"गुंडा"केवल एक व्यक्ति की कथा नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा, आत्मसम्मान और सामाजिक न्याय की कहानी है। यह रचना पाठकों को मनोरंजन के साथ-साथ जीवन के महत्वपूर्ण नैतिक संदेश भी प्रदान करती है। जयशंकर प्रसाद की यह कृति हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है, जिसे प्रत्येक साहित्य-प्रेमी को अवश्य पढ़ना चाहिए।

रितेश कुमार
प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय करनाल

सेहत का पावरहाउस : हाई-प्रोटीन मूंग दाल और पनीर चीला

आज की व्यस्त जीवनशैली में ऐसा भोजन चुनना आवश्यक हो गया है जो स्वादिष्ट होने के साथ-साथ शरीर को पर्याप्त पोषण भी प्रदान करे। प्रोटीन हमारे शरीर की मांसपेशियों, हड्डियों, त्वचा और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण पोषक तत्व है। प्रस्तुत है एक ऐसी रेसिपी जो स्वाद और स्वास्थ्य का बेहतरीन मेल है – मूंग दाल और पनीर चीला। यह नाश्ते, दोपहर के हल्के भोजन या शाम के पौष्टिक स्नैक के रूप में आदर्श विकल्प है।

आवश्यक सामग्री

- धुली मूंग दाल – 1 कप
- पनीर – 150 ग्राम (कद्दूकस किया हुआ)
- प्याज – 1 बारीक कटा हुआ
- शिमला मिर्च – 1 बारीक कटी हुई
- हरी मिर्च – 2
- अदरक – 1 छोटा टुकड़ा
- हरा धनिया – 2 बड़े चम्मच
- जीरा – 1 छोटा चम्मच
- नमक – स्वादानुसार
- काली मिर्च पाउडर – ½ छोटा चम्मच
- घी या तेल – आवश्यकता अनुसार

बनाने की विधि

मूंग दाल को 4 से 5 घंटे के लिए पानी में भिगो दें। इसके बाद दाल को अदरक और हरी मिर्च के साथ पीसकर गाढ़ा घोल तैयार कर लें।

घोल में नमक, जीरा, काली मिर्च, प्याज, शिमला मिर्च और हरा धनिया मिलाएँ। मिश्रण को अच्छी तरह फेंटें ताकि चीला हल्का और स्वादिष्ट बने।

नॉन-स्टिक तवा गर्म करें और हल्का-सा घी लगाएँ। एक कलछी घोल डालकर गोलाकार फैलाएँ। ऊपर से कद्दूकस किया हुआ पनीर समान रूप से बिखेर दें।

मध्यम आँच पर दोनों ओर से सुनहरा होने तक सेंकें। इसी प्रकार सभी चीले तैयार कर लें।

परोसने का तरीका

गरमा-गरम चीले को पुदीना चटनी, दही या टमाटर की चटनी के साथ परोसें। चाहें तो इसके साथ ताजा सलाद भी परोसा जा सकता है।

पोषण मूल्य

एक सर्विंग (दो मध्यम आकार के चीले) से लगभग 20 से 25 ग्राम प्रोटीन प्राप्त हो सकता है। मूंग दाल और पनीर का संयोजन शरीर को उच्च गुणवत्ता वाला प्रोटीन, कैल्शियम, आयरन और आवश्यक अमीनो अम्ल प्रदान करता है।

स्वास्थ्य लाभ

यह रेसिपी मांसपेशियों के विकास, वजन प्रबंधन और लंबे समय तक ऊर्जा बनाए रखने में सहायक है। खिलाड़ियों, व्यायाम करने वालों, विद्यार्थियों और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक लोगों के लिए यह एक उत्कृष्ट भोजन है। कम तेल में बनने के कारण यह पाचन में भी हल्की रहती है।

स्वाद, पोषण और सरलता का यह अद्भुत संगम निश्चित रूप से आपके दैनिक भोजन को अधिक स्वास्थ्यवर्धक और संतुलित बना सकता है।

तन्वी
सहायक प्रबंधक
एसएमई एवं कृषि हब, करनाल

निज भाषा उन्नति अहै
सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा ज्ञान के
मिटत न हिय को सूल

-भारतेंदु हरिश्चंद्र

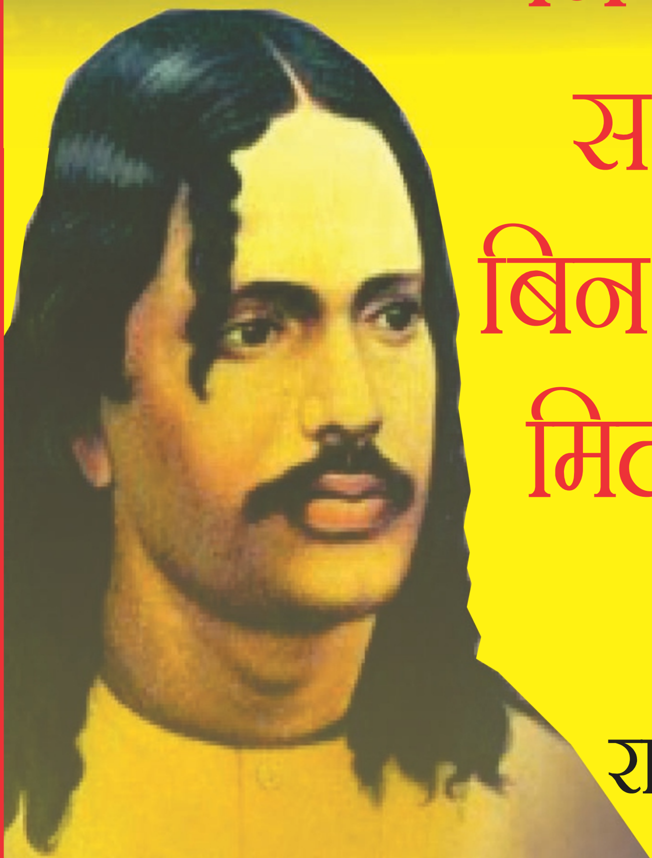

राजभाषा विभाग, भारत सरकार

यूको बैंक (भारत सरकार का उपक्रम)

UCO BANK (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का

Honours Your Trust

अंचल कार्यालय, करनाल

"हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसके निरंतर विकास को कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती।"

- पंडित गोविन्द बल्लभ पंत

यूको बैंक अंचल कार्यालय, दुर्गा मन्दिर परिसर के अन्दर, जी.टी. रोड, करनाल-132001 (हरियाणा)